

L 1261 (1)

L 1261

L 1261

С 1767

Слбгу

Слбгу

ΕΛΕΓΟΣ

ΕΙΣ

ΑΛΕΞΑΝΔΡΟΝ

ΤΟΝ Α.



Π Ξ Σ Η Ξ

Π Ε Χ Α Λ Ξ Η Α Ξ

Η Α

ΚΟΝΧΙΝΟΥ

ΑΛΕΚΣΑΝΔΡΑ Ι.

Π Ο Ι Η Μ Α

Ε Λ Ε Γ Γ Ι Ο Ν

*εις τὸν αἰόδιμον*

ΑΥΤΟΚΡΑΤΟΡΑ

ΠΑΣΩΝ ΤΩΝ ΡΩΣΣΙΩΝ

ΑΛΕΞΑΝΔΡΟΝ

ΠΡΩΤΟΝ.

*ποιηθὲν ὑπὸ τοῦ*

*Οἰκονόμου Κωνσταντίνου*

*Οἰκονομίδου*

*α ω κ ε.*

---

*ἐτυπώθη*

ΕΝ ΠΕΤΡΟΥΠΟΛΕΙ.

---

ПЕЧАТАТЬ ПОЗВОЛЯЕТСЯ

съ пѣмъ, чтобы по напечатаніи, до выпуска изъ Типографіи, предшавлены были въ главный Цензурный Комитетъ семь экземпляровъ сего сочиненія для опшравленія куда слѣдуетъ, на основаніи узаконеній. С. Петербургъ, Октября 23 дня, 1827 года.

*Цензоръ Василій Семеновъ.*

Книга сѣхъ издана въ Санктъ-Петербургѣ  
въ типографіи. 27 Июль 1828 года.  
Удѣльн. М. Браунъ-Финскій

311 2262.

У 1261.1. 1828. П Ъ С Н Ъ

П Е Ч А Л Ь Н А Я

НА

КОНЧИНУ

АЛЕКСАНДРА I,

БЕЗСМЕРТНАГО САМОДЕРЖЦА

ВСЕРОССИЙСКАГО.

СОЧИНЕННАЯ

ЭКОНОМОМЪ КОНСТАНТИНОМЪ

ЭКОНОМОВИЧЕМЪ,

И ПЕРЕВЕДЕННАЯ

СОСТОЯЩИМЪ ПРИ ВѢНСКОМЪ ПОСОЛЬСТВѢ

СВЯЩЕННИКОМЪ

Гавриломъ Меглицкимъ.

САНКТПЕТЕРБУРГЪ,

въ типографіи ДЕПАРТАМЕНТА НАРОДНАГО ПРОСВѢЩЕНІЯ.

1828.

Вс. Гос. Ун-т  
Научная  
библиотека им.  
Горького

У 1261.1.

Церковн. 1930

62605

ΤΗΙ ΜΕΓΑΛΕΙΟΤΑΤΗΙ.

*και. ευσεβεστατηι.*

ΑΥΤΟΚΡΑΤΟΡΙΣΣΗΙ.

ΜΑΡΙΑΙ. ΘΕΟΔΩΡΙΑΙ.

*ιερόν.*



ЕЯ ВЕЛИЧЕСТВУ

БЛАГОЧЕСТИВѢЙШЕЙ ГОСУДАРЫНѢ

ИМПЕРАТРИЦѢ

МАРИИ ТЕОДОРОВНѢ.

Ἐπιμένει ὁ Βασιλεὺς εἰς τὸν αἰῶνα ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ. — Αἱ δικαιοσύναι αὐτοῦ οὐκ ἐπλήσθησαν, καὶ ἡ δόξα αὐτοῦ οὐκ ἐξαλειφθήσεται. Τὸ ὄνομα αὐτοῦ ζῆ εἰς γενεάς, καὶ τὸν ἔπαινον αὐτοῦ ἐξαγγελεῖ ἡ Ἐκκλησία.

Ψαλμ. Ξ, 8. Σειράχ ΜΔ, 10 — 15.

Пребудеть Царь во вѣкъ предъ Богомъ. — Правды Его не забвены быша,  
и слава Его не потребишя. Имя Его живеть въ роды, и похвалу Его  
исповѣсть Церковь.

Пс. 60, 8. Сир. 44, 10 — 15.


---

## ΠΟΙΗΜΑ ΕΛΕΓΕΙΟΝ.

---

Ἄρχετε Ῥωσσιάδες τοῦ πένθους, ἄρχετε Μοῦσαι,  
Κᾶκ λιγυρῶν σομάτων οἰκτρὸν αἰεσατ' ἔπος·  
ὦλετ' ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ δῖον μένος, ὤλετο, αἶ, αἶ,  
Ῥώσσων Ἀυτοκράτωρ, κῦδος ἀνακτορίας·  
Νῦν πόλιες μύρεσθε, καὶ ἔθνεα μυρία φωτῶν  
Πότμον ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ πατρὸς ἀποφθιμένου·  
Νῦν στρατὸς εὐρυβίης βρυχήσατο δάκρυα λείβων,  
Κράντορος ἡγαθέου κοιρανίην ποθέων·  
Ἡγεμόνες κλαίουσι τὸν ἡμερόεντα Μόναρχον,  
Καὶ ζόνος ἀρχομένων ὄρορεν ἐκ μελάθρων·  
Πᾶσαν πένθος ἔμαρψε πολύζονον εὐρυανάσσης  
Ἀρχῆς Ῥωσσηίδος γαῖαν ἀπειρεσίην·  
Τῆς μὲν ἔπ' οὐ πάμπαν δύνει φάος ἡέλιοιο,  
Νῦν δ' ἄχεος νεφέλη πᾶσαν ἐπισκότασεν·


---



## ПѢСНЬ ПЕЧАЛЬНАЯ.

---

Начните общій плачь, начните Росски Музы,  
И гореспную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ:  
Богоподобнаго не спало АЛЕКСАНДРА;  
Увы! Монарха нѣшь — державной Россовъ славы;  
Скорбите города, несмѣшны шмы людей,  
Объ АЛЕКСАНДРѢ веѢ, скорбите объ ОпцѢ.  
Въ слезахъ шеперь спенешъ великосильно войско,  
О власпи добраго Владыки сожалѢя.  
Начальники скорбяшъ о кропкомъ изъ Царей,  
И подначальныхъ спонъ исходишъ изъ домовъ.  
Со спономъ плачь обяль сію неизмѢриму  
Державы Россіанъ обширновласпной землю;  
И скорби облако запмилло нынѢ шу,  
У коей Солнца свѣшъ заходишъ не вездѢ.



Ἄρχετε Ῥωσσιάδες τοῦ πένθεος, ἄρχετε Μοῦσαι,  
Κᾶκ λιγυρῶν σομάτων οἰκτρὸν αἰεσατ' ἔπος·  
Αἶ τὸν ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΝ! Βορρᾶς σμαράγῃσε βοήσας  
Ἐκ πόλου ἀκροτάτου, κᾶντεβόῃσε Νότος·  
Καὶ Ζέφυρος κελάδησε, καὶ ἔαχεν ἠῶος Εὐρος,  
Αἶ τὸν ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΝ! ὤλετο δῖος ἀναξ!  
Ῥωκεανὸς δ' ἐπέμυκε, καὶ ἔβραχε πόντος ἀπείρων,  
Καὶ θρήνων ποταμοὶ χεύμασι πλησαν ἅλα,  
Καὶ νῆες κονάβησαν ἐελμέναι ἐνδοθεν ὄρμων,  
Κῆν πλόῳ ἀλλήλας ἀντιπαρερχόμεναι.  
Πείρατα γῆς ἤϊξε κακοῦ φάτις, ὡς ὅτε λαμπρὰ  
Βροντὴν σμερδαλέην ἤλασεν ἀξεροπή.  
Ῥωμοξαν δ' ἀρ' ἔπειτα θεουδήες βασιλῆες,  
Καὶ σφιν ἐπὶ σκήπτρων ἔκπεσε δάκρυ τέρεν,  
Διου ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ μεμνημένοι, ὅς ῥάτε πολλὰ  
Ἐσθλά τε προφρονέως πᾶσιν ἔοργε φίλοις.



Ἄρχετε Ῥωσσιάδες τοῦ πένθεος, ἄρχετε Μοῦσαι  
Κᾶκ λιγυρῶν σομάτων οἰκτρὸν αἰεσατ' ἔπος·  
Τοῦτό τοι, ὦ Πετρούπολις, ἄλγος ἅατον ἔβρισεν,  
Αῤγαλέως νύσσον σπλάγγνα τε καὶ κραδίην.  
Κλυζομένου σε πέρυσσιν ἐπέσσυτο ρεύματα Νευᾶ,  
Οἴδματι μαινομένῳ κρύψαι ἐπειγόμενα,  
Ἀπορρῶς δε σέθεν ἱερὸν πέδον, ἀσυφέλικτον,  
Ῥοῦς ὀλιγηπελέων χάσσατο, ἀζόμενος·

Начните общій плачь, начните Росски Музы,

И горестную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ :

Ахъ, АЛЕКСАНДРЪ! взревѣлъ ужасно Нордъ завывши,

И Югъ ошь полюса съ рыданьемъ опозвался.

Воскликнулъ и Зефиръ, и Эвръ возопіялъ :

Ахъ, АЛЕКСАНДРЪ! опшелъ, опшелъ великій Царь!

Сшенешъ и Океанъ, и Понпъ шумипъ пространный,

И рѣки слезъ моря спруями наполняюшъ.

Вопль слышанъ въ корабляхъ, внупръ кои приспаней,

И кои плавая, другъ другу вспрѣчь идушъ.

Во всѣ концы земли вѣспъ злая пролетѣла,

Какъ свѣшла молнія, гоня ужасны громы.

Богохранимые заплакали Цари,

И нѣжны слезы ихъ на Скипшры полились,

При мысли о Богоподобномъ АЛЕКСАНДРѢ,

Который, много имъ, какъ брашьямъ блага дѣлалъ.



Начните общій плачь, начните Росски Музы,

И горестную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ :

О Петроградъ! шебя жестюка боль ѡбьяла,

Болѣзненно швои пронзивши грудь и сердце.

За годъ предъ симъ Невы поднявшися вода,

Въ ужасной бурѣ волнь шебя спѣшила скрыпъ ;

Твоиожъ священныя швердыни уважая,

И ша назадъ безъ силъ мгновенно удалилась.

Νῦν δ' ἄρα σεῖο πρόσωπα, καλὴ πόλις, εὐρουάγνια,  
Κλύζουσιν δακρύων λευγαλέων λιβάδες.

Πάντοσε παπταίνεις, Βασιλὶς πόλις, ἦν που ἐσείδης  
Δῖον ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΝ πάντη ἐπερχόμενον,

Ἡ στρατὸν ἀμ πεδῖον τὸ Ἀρήϊον ἀμφιέποντα,

Ἡ κοσμέοντα νέαις σὸν πέδον ἀγλαΐαις,

Ἡέ γε τειρομένοισι βοηθῶον εἶθαρ ἰόντα,

(Ὡς πολέας ἄτης ῥύσατο πλημμυρίδος.)

Ἡ σέθεν ἐκ νήσων πολυανθέων, ἢ ἀπὸ λαῶν

Τηλόσ' ἐποπτείης οἴκαδε νισσόμενον.

Ἀλλὰ μιν οὐκέτι χαιρούσ' ὕψαι, ὡς τὸ πάρος περ.

Οἴχετ' ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΣ! καὶ σὺ βαρυσενάχεις.

Σὺν δὲ Πέτρου μεγάλιο μέγ' ἔλλακεν ἀνδριᾶς ἦρω,

Οἴκιτιθ' υἱωνοῦ πότμον ὀδυρομένου.



Ἀρχετε Ῥωσσιάδες τοῦ πένθους, ἀρχετε Μοῦσαι,

Κἄκ λιγυρῶν ζομάτων οἴκιτρον ἀείσατ' ἔπος.

Καὶ δὲ σὺ πρόσβα πέλις, Μόσχα πότνι, ὀλβιόδωρε,

Ῥάσσων παμμήτωρ, νῦν γούωσα κάθη.

Καδδὲ σέθεν κεφαλῆς βασιληίδος αἰθαλόεσσακ

Χερσὶν ἐλουσα χεῖς γηραλέησι κόνην

Δητῶν· τοὺς τ' ἔρραξας ἐρειπομένη φλογὶ πολλῇ,

Εὐτε σ' ἐπερῶοντ' οὐχ ὀσίησι δίκαις.

Ἀλλὰ σε γ' ἐκ τέφρης πάλιν ὤρθωσ' ἰσόθεος φῶς,

Δῖος ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΣ μείζον', ἀγαυοτάτην.



Но нынѣ красота! спогноширокій градъ!

Ужель съ швоихъ ланишь спруяпся шоки слезъ?

Градъ Царственный! пы зришь вокругъ, дабы увидѣшь,

Не шеспивуешъ ли гдѣ швой АЛЕКСАНДРЪ великій,

Не водишь ли полки на Марсовыхъ поляхъ,

Не украшаешъ ли величіемъ земли,

Иль не спѣшишь ли Самъ къ спрадающимъ на помощь,

Скорѣй чшобы спасать, какъ было въ наводненъе,

Иль съ дальнихъ оспрововъ, гдѣ царспивуешъ весна,

Не возвращаешся ль, озрѣвъ народъ, домой,

Но нѣшь, пы въ радости ЕГО не узришь болѣ:

Нѣшь АЛЕКСАНДРА, нѣшь; и пы спенешъ ужасно!

Звучишь Пенровъ колоссъ, споящій на скаль,

Скорбишь Геройска грудь о Правнука концѣ!



Начните общій плачь, начните Росски Музы,

И горешпную пѣснь воспойше гласомъ сладкимъ:

И пы Москва, блаженспвъ виновница великихъ,

Мать обща Россіанъ, сѣдишь шеперь и плачешъ.

Въ маспшой спароспи берешъ руками прахъ,

И сыплешъ на швою державную главу, —

Прахъ черный опъ враговъ, неисповыхъ и дерзкихъ,

Копорыхъ, въ пламени упадши, раздавила.

Но мужъ Божеспвенный и славный АЛЕКСАНДРЪ

Изъ пепела шебя славнѣйшею воздвигъ.

Νῦν δέ σοι οἶχετ' Ἄναξ μέγα φέρτατος, ἠπιόδαρος,  
Οἷς λαοῖσι λιπῶν ἄλγεα καὶ ζοναχάς.



Ἄρχετε Ῥωσιάδες τοῦ πένθεος, ἄρχετε Μοῦσαι,  
Κᾶκ λιγυρῶν ζομάτων οἰκτρὸν ἀείσαι ἔπος·  
Πέντε μὲν ἐνδέδμηται ἀγακλύμεναι Βασιλεῖαι  
Χρυσέα ὑπὸ σκήπτρῳ Ῥωσσηίου Κράτεος·  
Τρεῖς δ' ἐπὶ πενήκοντα νομοὶ περὶ πάντη ἔασι,  
Τρισὸς δ' ἐπὶ ὀκτακόσῃ ἄγεα ὑψίδομα,  
Τρεῖς δ' ἔτι χιλιάδες πτολιέθρων, ἀμφὶ δὲ πολλαὶ  
Μυριάδες κομέων πάντη ἐπεσκέδαται·  
Ἐνθα δὲ μυριάδες ἑξαχίλιαι ναίουσιν,  
Ἐξήκοντ' ἔθνέων φύλα πολυσπερέων·  
Πάντ' ἐπὶ ἈΛΕΞΑΝΔΡῶ κυανόσολα δακρυχέουσιν  
Ἐν χθονὶ καὶ νήσοις, σκυθρὸν ἀκηχέμενα.  
Ἐν δὲ Σιβηρίῃ πούλυχρυσος, πολύχαλκος,  
Στυγνὰ κατηγνῶσ' ἔξεται ἀκροτάτη·  
Οὔτε μὲν Ἰστίσκοιο τόσος ῥόος εὐρὺς ἐπάρδει  
Ἀκροκελαινῶων, πάντη ἐλισσόμενος·  
Οὔτε τόσον νιφάδεσσι πυκνοῦται χειμερίησι,  
Λάβρον ἐπεσσυμέναις οὔρεα καὶ πεδία·  
Οὔτε τόσον λιθάκεσσι ἀριπρεπέων ἀδαμάντων  
Βρύει, τοὺς τε τρέφει βένθεσ' ἐὼν λαγόνων·  
Ὅσσα βαρυξενάχουσ' ἀδινὸν κατὰ δάκρυα λείβει  
Ἐπὶ λαοτρόφῳ κοιρανῶ οἰχομένῳ.



И нынѣ скрылся пвой Царь славный, благодѣтель,  
Народу своему печаль и скорбь оспавивъ.



Начните общій плачь, начните Росски Музы,  
И гореспную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ:  
Склонились пяпъ короць и цѣрспвъ великославныхъ  
Подъ Скинепръ золопый одной Державы Россовъ.  
И при и пяпъдесяпъ управы въ оной супъ,  
Великихъ восемь сопъ и придесяпъ градовъ,  
Три пысящи весей и сель, во кругѣ коихъ  
Раскиданы вездѣ селеній мириады.  
И смерпныхъ въ нихъ живепъ шеспъ пысячь мириадъ,  
Разсыпанныхъ въ шеспти-десяпти племенахъ.  
Всѣ въ чорномъ слезы льюпъ, скорбя объ АЛЕКСАНДРѢ,  
На маперой земди, на оспровахъ рыдаюпъ.  
Богата мѣдью памъ и золопомъ Сибирь,  
Опъ скорби внизъ главу склонивъ, сѣдипъ вдали.  
Ирпыпъ рѣка ее не сполько напояепъ,  
Чернѣясь на верху и всюду извиваясь;  
Равно и снѣгъ, въ комкахъ валящійся зимой,  
Не сполько упучнипъ ея полей и горъ;  
Прекраснѣйшихъ спруипъ не сполько діаманповъ,  
Копоры въ глубинахъ расшипъ своей упробы:  
Слезъ сколько лепъ въ большомъ спенаніи она  
По добромъ изъ Царей, пипашелѣ людей.



Ἄρχετε Ῥωσσιάδες τοῦ πένθεος, ἄρχετε Μοῦσαι,  
Κᾶκ λιγυρῶν ζομάτων οἰκτρὸν ἀείσατ' ἔπος·  
Ἡ δ' Ἀρετὴ τε, Δίκη τε, καὶ ἡμερόεσσ' Ἐλεητής,  
Καὶ Μῆτις γεραρὰ ξυγὸν ἔθεντο γόνον·  
Καὶ Χάριτες μύρονται ἐπ' οἰχομένῳ Βασιλῆϊ,  
Ἐσθλῶ, μελιχίῳ, κειράμεναι πλοκάμους·  
Καὶ Νίκη σεφάνους ἀπεσεύσατο· καὶ δ' ἐρατεινῆς  
Εἰρήνης θαλερὴν ὦπ' ἐδίηνε δάκρυ·  
Καὶ Σοφίης ἔδεθλα σενάχουσ'· ἰαχὴν δέ τε Ναοὶ  
Ῥῆξαν κωδῶνων χεῖλεσι φρικαλέοις.  
Πάντα δ' ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ ποθὴ ἴκετο· τῷ δ' ἄρα πάντων  
Νωλεμές ἐν φρεσσὶν μέμβλετο θεσπεσίαις.



Ἄρχετε Ῥωσσιάδες τοῦ πένθεος, ἄρχετε Μοῦσαι,  
Κᾶκ λιγυρῶν ζομάτων οἰκτρὸν ἀείσατ' ἔπος·  
Καὶ σὺ δ' ἂν ἐξ Ἑλένης Ἀτλαντίδος ὄβριμε Τитάν,  
Εἰ ζωοῖς μετέας, ἔβραχες ἀχνύμενος·  
„Σωσίπολι Βασιλῆα, ὄου μ' ὑπὸ χερσὶ δάμασσειν  
„Ἀδράσεια Δίκη, κλείετε γηγενέες! „  
Ἄλλὰ σὺ μὲν κεύθῃ ἀλιερχέος ἐνδοθι πέτρης,  
Οὐκέτι παφλάζων ἔθνεσιν οἶδμα φόνου·  
Ἡ δ' ἄρα, μέσφ' ἀνέχῃσι πρὸς αἰθέρα δειράδα μακρὴν,  
Ῥίξης ἡνεκέεσσ' ἔμπεδος ἐν πελάγει,  
Καὶ σφε ῥόος κλύζῃσιν ἀτέρμονος Ὠκεανοῖο,  
Καὶ οἱ ἐπαντέλλωσ' ἤματα νυξὶν ἴσα,

Начните общій плачь, начните Росски Музы,

И гореспную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ:

Доброша съ Правдою и Разумъ достпчпмый,

И Милоспъ нѣжная сошлися вкругъ, и плачупъ:

Побѣда на вѣнцы не зрипъ; любезный миръ

Росипъ свое лицо прекрасное слезой.

Скорбяпъ и нѣжныя Харипы о кончинѣ

Монарха добраго, власовъ своихъ съ перзаньемъ.

И мудроспи жилищъ священныхъ слышенъ спонъ,

Вопаь храмы издаюпъ горпанью колоколь.

На все пришла печаль опъ смерти АЛЕКСАНДРА,

Въ Божеспвенныхъ Его чпо мысляхъ обращалось.



Начните общій плачь, начните Росски Музы,

И гореспную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ:

А еспьлибъ былъ въ живыхъ и пы, Тишанъ ужасный!

Во скорбибъ проревѣлъ съ Елены Апшанпидской:

«Почпшите смерпные Спасителя градовъ,

Кому я покоренъ жестокою судьбою.»

Но нынѣ кроешся среди скалы пвердѣйшей,

Чпобъ смерпнымъ гибели не извергапъ опшолѣ;

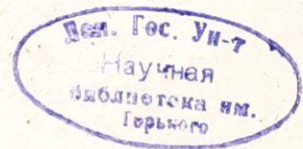
Она жъ главу свою подъемлешъ къ облакамъ,

Недвижимо споя глубокихъ въ безднѣ водъ;

Къ ней будешъ Океанъ безмѣрный приражапся,

И равный ночи день сѣяпъ шамъ не преспанешъ;

62605



Μνήμα σέθεν μέσσον κόσμου νέου ἠδὲ παλαιοῦ  
Στήσεται· ἀνθρώποις σὸν πότμον ἀγγελέον.  
Οἷα δὲ τοῖο Γίγαντος ἀρήϊα σήματα πολλὰ  
Μίσσας ἐν νηοῖς σείεται ἑροτάτοις,  
Τοῖς αὐτὸς ἐπέχραυσε· τὰ δ' αὐτόθι κρήματα ἔρημα,  
Χειρῶν κηρύσσοντ' οὐχ ὀσίων ὄλεθρον.  
Τηλεβόλων δ' ἐτέρωθ' ἀναδέδρομεν οὐρανομήκης  
Οἷς ἐννηκοσίη, πῦρ ποτ' ἐρευγομένων,  
Τοῖσι Γίγας θύων Ῥώσσοις ἐπόρουσεν ἀγαυοῖς,  
"Ῥχετο δ' ἠὲτ' ἄελλ', ὄπλα πέλωρα λιπών·  
Κέεται δ' οὐ φοίνισσαν ἀπ' ἐκ σομάτων φλόγ' ἀέντα,  
Ἄλλὰ κλέος Ῥώσσων κράντορος ἠγαθέου,  
Δίου ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ· τὸν περ Θεὸς ὑποῦ ἀέξων,  
Πολλοῖς τειρομένοις ἔθνεσι θῆκε φῶος.

~~~~~  
Ἦὲτ' ἐρισμαράγων ζρατὸς αἴσσει νεφελῶν  
Ὅμβρος λαβροπόδης, ἠὲ χάλαζ' ὀλοή,  
Τοῖαι ὁμοῦ Τιτῆμι πυκναὶ κίνυντο φάλαγγες,  
Ῥωσσίην πραθέειν πᾶσαι ἐπειγόμεναι·  
Πᾶσαι μυριάδες σφαραγεῦσαι πεντήκοντα,  
Πέντ' ἐπὶ πέντ' ἔθνεων ἄνθε' ἀρειμάνια·  
Ἰππέες τε, πρυλλέες τ', ἀκαμαντοπόδων τ' ἐλατῆρες  
Βροντῶν, πῦρ ὀλοὸν φηγνυμένων ἄμοτον.  
Πῆ ποτ' ἔβαν;— Μοῦνων τρισμυρίων αὐτι πέρησαν  
Λεῖμματα Νειμηνοῦ καγχαλόωντα ῥόον·

Средь спарато она и новаго міровъ

Споишь, какъ мавзoley погибели швоей.

И множесство знаменъ побѣдныхъ Исполина,

Во храмахъ, что въ Москвѣ, къ копорымъ приразился,

Склонились долу всѣ, и праздные висяшь,

Нечиспыхъ чтобъ вѣкамъ погибель возвѣщаешь.

А здѣсь гремящая до облакъ досязала,

Огнь сила дышуца девяти сошь драконовъ,

Рыгая коими Типанъ въ Россію впаль,

И въ ней какъ вихрь прошель, а спрашныя повергъ

Орудія свои, не огнь мешаешь кровавый,

Но славою звучаешь благаго АЛЕКСАНДРА,

Богopodobнаго, копорый вознесенъ,

Спрадающимъ чтобы народамъ помощь даешь.



Какъ пучи облаковъ подъемлюшя громовыхъ,

Дождь зимній или градъ лешающихъ каменевъ:

Съ Типаномъ двигались гуспые шакъ ряды,

Россію швердую спѣшащи испребить.

Опчаянны въ пяши-десяши миріадахъ,

Опборны изъ языкъ, любимы Марса чада,

На коняхъ, пѣшіе, съ влекущими громы,

Разящие всегда погибельнымъ огнемъ.

И гдѣжь дѣвались? Три шолько миріады

Ошавшихся прешли Немень рѣку шумящу.

\*\*

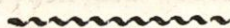
Ἐσπετο δ' ἄρ' φεύγουσιν ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΣ θεοειδής,  
Εὔτε κνέφας μετέπων φαίνεται ἡέλιος·  
Λαοὶ δ' ἐρρώσαντο· γέλασσε δὲ πᾶσα περὶ χθῶν·  
Ἵψοῦ ἀνασχόμενοι κρᾶτα βαρυνόμενον.  
Ὡ κλεινῶν ἀέθλων, τὰ ζήσεται ἡματα πάντα,  
Αὐτὸν δ' ἀθλοφόρον πικρὸς ἔμαρψε τάφος!



Ἄρχετε Ῥωσσιάδες τοῦ πένθεος, ἄρχετε Μοῦσαι,  
Κᾶκ λιγυρῶν σομάτων οἰκτρὸν ἀείσαι ἔπος·  
Εὐρώπη βασιλεία, σὺ δ' ἄρ' σέθεν Εἰρηνάρχεω  
Ἐννεπ' ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ πόσσα τρόπαι' ἔδρακες·  
Οἷα δ' ἄμ' ἀγρομένοις Βασιλῆσιν ἐσθλὰ ἔοργεν,  
Ἐθνεσ' ἐπαρκείων δουλοσύνην συγερῆν.  
Ὡς μὲν Ἄρην κατέπαυσ' ἀνδροκτασίης ἀλεγεινῆς,  
Μαινόμενον μῆσιν πᾶσι τριηκοσίοις·  
Τέρσε δὲ λάβρον Ἰβριεως χειμάρροον, ὅς ῥά τε γαῖαν  
Κλύζεν ἐπαφρίζων αἵματι καὶ δάκρυσιν·  
Ὡς δὲ θρόνους σήριξεν ἀγακλήων Βασιλῆων,  
Πολλῶν θ' ἡγεμόνων τέθμια καὶ πτολίων.  
Ἐσπετε Παρίσιοι μεγαλοπτόλιες, μεγάτιμοι,  
Μουσέων καὶ Χαρίτων δαιμόνιοι τροφῆες,  
Εἴ τις ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ ποτὲ φίλτερος ἐχθρὸς ἔγεντο,  
Ἕπτηθεῖσι νέμων κέρδος ἐλευθερίην.  
Σφῆας μὲν γάρ τ' ἐσάωσε καὶ αἰδομένην μετὰ Μόσκαν,  
Νικητῆς ἐπιβάς· οὐδ' ἀλάπαξε πόλιν



Богopodobный же за ними АЛЕКСАНДРЪ,  
Какъ солнце красное явился послѣ пучь.  
И вдругъ вспрынулъ народъ, земля же улыбаясь,  
Подъяла голову предъ симъ опягощенну.  
О славны подвиги! вы будете всегда,  
Подвижникъ же въ вѣнцѣ во гробѣ мрачномъ скрипъ.



Начните общій плачь, начните Росски Музы,  
И горешную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ:  
Европа Царственна! скажи, профеевъ сколько  
Ты АЛЕКСАНДРУ въ честьъ воздвигла Миротворцу?  
И сколько сдѣлалъ благъ съ Царями вмѣстѣ Онъ,  
Съ копорыми снималъ съ народовъ ихъ яремъ?  
Какъ Марсу повелѣлъ оспавишь сѣчь ужасну,  
Черезъ приспа мѣсяцовъ ярящемуся ровно,  
И спрашную рѣку киченя осушилъ,  
Что землю кровію поила и слезой;  
Какъ шроны ушверждалъ Царей великославныхъ,  
И право городовъ и вмѣстѣ власпъ владѣльцевъ.  
Скажи Парижъ, о пы! великій, славный градъ!  
Щасшливо знающій пипашъ Харипъ и Музь:  
Врагъ былъ ли гдѣ нибудь любезнѣй АЛЕКСАНДРА,  
Свободой кшо дарилъ Собою побѣжденныхъ?  
Тебя Онъ спасъ, хоши и сожжена Москва;  
Съ побѣдою пришелъ, не городъ испребить,

Χρυσέην, ἀλλ' ἐφίλησε, φίλην ὡς πατρίδα γαῖαν·  
Οὐρα δὲ Γαλλίης σῆσεν ἀκηρότατα.  
Ἦγαγε δ' αὖτις ἄνακτ' ἀκακήτην, οἷσιν ἀνάσσειν  
Εὐκλεέσιν λαοῖς, ἥπιον ὡς πατέρα·  
Εἴκοσι δ' ὀρνυμένων βασιλῆων, εἴκοσι δ' ἐθνέων  
Μῆνιν χωσμένων ἴσχε κατηπιόων.  
Οἷον ἐνὶ κλισίῃς εἶσε σφατόν, οἷά περ ἄρνας,  
Ἄνδρῶν αἰχμητέων μυριάδας ἑκατόν!  
Ῥύσατο δ' αὖτε πρόπασαν ὀθνεῖης τ', ἀργαλέης τε,  
Φρουρῆς Γαλλίην, καὶ τακερῆς δαπάνης.  
Καμπανίη, σὺ δ' εἶδες ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ θεοειδοῦς  
Θαῦμα μὲν' εὐσεβίης, πᾶσιν ἀειδόμενον·  
Σοῖσι γὰρ ἐν πεδίοις, Ἄρης πάρος οἷσιν ἐλύσσα,  
Εἰρήνης βωμοὺς ἴδρυσε δῖος Ἄναξ.  
Ἐπὶ μὲν ἀγνότατοι βωμοὶ πέλου, ἐπὶ δ' ἄρ' εἶλαι  
Ῥώσων εὐσεβέων ἀμφὶς ἀγγέρατο,  
Ῥυμείοντες ἄνακτα Θεὸν μέγαν, ὅς ῥάτε πᾶσιν  
Εἰρήνης γλυκερὸν ἦμαρ ἔδωκεν ἰδεῖν.  
Πολλὰ γ' ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ πέλει ἔργματα· τοῖς δ' ἐπ' ἀώτοις,  
Ἄλλοτ' ἐπ' ἄλλο φάτις, ὡς τε μέλισσα, θύνει,  
Ἀμβλήδην γούωσ', ὃ οἱ ᾄχετο φαιδιμος ἦρως,  
Ὡς ἠὼς δροσόεσσ' εἶαρος ἀνθοφόρου.



Но полюбилъ, какъ бы свою драгую землю,  
И Галловъ сохранилъ предѣлы невредимы.  
Законнаго опятьъ возвелъ на пронъ Царя,  
Чтобъ какъ опецъ народомъ славнымъ правилъ.  
А двадесять Царей и двадесать народовъ,  
Гнѣвъ дышущихъ, душой кропчайшей одолѣлъ.  
И рапниковъ ЕГО, мужей спо мириадъ,  
Какъ агницы на поляхъ, покоились въ шапрахъ.  
И цѣлу Галлію избавилъ чуждой спражи,  
И не далъ ей шерпѣшь опъ гибельныхъ уроковъ.  
Шампань! въ Царѣ Богоподобномъ АЛЕКСАНДРѢ,  
Великое для всѣхъ ны зрѣла чудо Вѣры.  
На пѣхъ поляхъ пвоихъ, свирѣпспвоваль гдѣ Марсь,  
Богоподобный намъ посшавилъ Алшари.  
Седьмъ было Алшарей, седьмъ полчищъ были пакъ же  
Вокругъ къ нимъ двинушы Россіянъ благовѣрныхъ,  
Поющихъ Богу пѣснь, великому Царю,  
Копорый нынѣ далъ любезный миръ узрѣшь.  
Но сколько дѣлъ ЕГО! по коимъ звучна слава,  
Пчела какъ со цвѣща на цвѣпъ перелепаетъ,  
Со вздохами жужжа: опшелъ Герой, опшелъ,  
Какъ росная заря цвѣпущія весны.



Λείβετε Ρωσσιάδες τῷ πένθει δάκρυα Μοῦσαι,  
Κᾶκ λιγυρῶν ζομάτων οἰκτρὸν αἰεῖσαι ἔπος·  
Εὐδαίμων Μαιῶτις, ἀγάρρῳε, σοὶ δ' ἄρ' ἔμελλεν  
Ὅψε φάος λάμψαι δισσὸν ἀνακτορίης!  
Τὴν γὰρ σεῖο πόλιν Ταῦγάρρῳον ἐσχατόωσαν  
Νούσῳ ἐπειγομένη εἴλειτ' ἐπιζαθμίην  
Δία ἘΛΙΣΣΑΒΕΤΑ εὐρυκρείουσα Ἄνασσα  
Ῥώσσων, ἱεμένη εὐτροχάλοις ὄχεσιν,  
Ὅφρα δέμας ῥώσῃ βασιλήϊον ἄγχι θαλάσσης  
Εὐκράεσσι νότου θεσπεσίῳ πνοαῖς·  
Αὐτὰρ ὄγ' ἧ ἀλόχῳ πινυτόφρονι πομπὸς ἀμύμων  
Ἔσπετο προφρονέως φαιδιμος Ἄτοκράτωρ,  
Αὐτὸς ἑταιρίζων ὁ τρισόλβιος, ὁ τριφίλητος,  
Κρειούσῃ ἀλόχῳ, τὴν περὶ κῆρι φίλει,  
Χήρατο δ' εἰσορῶν βασιλεύτατον εἶδος Ἀνάσσης  
Νούσου ἀπὸ ζυγνῆς ἧκ' ἀναδυόμενον·  
Βῆ δὲ περικτιόνων μετὰ πῖονα ἔθνεα λαῶν,  
Ἦπιος ὤζε πατήρ, τοὺς δ' ἐπιουρόμενος.



Λείβετε Ῥωσσιάδες τῷ πένθει δάκρυα Μοῦσαι,  
Κᾶκ λιγυρῶν ζομάτων οἰκτρὸν αἰεῖσαι ἔπος·  
Ἄξενος ἔσσι μέλας τε, βαρύζονε, ἄγριε Πόντε,  
Σὴ τ' ἀξεινοιάτῃ ἔπλετο γειτονίῃ!  
Μηκέτι γ' ἐν πεδίοις πολυφόρβοις Ταυρίδος αἴης  
Λείρι' ἐπαντεῖλαι, μηδὲ ῥόδον γελάσαι,

Пролейте пока слезъ, пролейте Росски Музы,  
И горестную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ :  
И пы счастливая и бурная Меописъ  
Узрѣла наконецъ сутубый свѣтъ Державный.  
Твой городъ Таганрогъ, стоящій вдалекѣ,  
Недужная себѣ въ жилище избрала,  
Царица Росская, ЕЛИСАВЕТА славна,  
Прибывшая шуда на колесницахъ легкихъ,  
Чшобъ силы Царскія при морѣ укрѣпишь  
Прохладой дышущихъ полуденныхъ вѣтровъ.  
Съ Супрутой мудрою Самъ слѣдоваль охотно,  
Монархъ блиспапельный и спутникъ знаменитый,  
Бывъ прелюбезень въ семъ и прераженъ пупи  
Съ Державною Своей, любимой всей душой.  
О! сколь онъ весель былъ, когда лице Царицы  
Опъ скорби начало пошиху проясняшь!  
И пакъ во племена окреспныя пошель,  
Дабы и ихъ узрѣшь, какъ нѣжному опцу.



Пролейте пока слезъ, пролейте Росски Музы,  
И горестную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ :  
Ты неприязненъ, дикъ, Понпъ черный и ужасный,  
И окреспность швоя содѣлалась враждебной.  
Да не взойдушъ опсель Тавриды на поляхъ  
Ни бѣлы лиліи, ни розъ веселыхъ родъ;

Μηδὲ θάλοι κατ' ὄρεσφιν ἀμειδέσι θήλυς ἐέρση,  
" Ἀσθματα δυσκελάδου χευαμένοις ἀνέμου·  
" Ἐνθα μέσοις ἡδέως σρωφόμενον οἷς μετὰ λαοῖς  
" Ἡρῶν ἌΛΕΞΑΝΔΡΟΝ νοῦσος ἔτυψ' ὀλοή·  
" Ὡς δ' ὅτε πευκαλίμῳ βεβλημένος ἦπαρ οἷζῶ  
" Αἰετὸς, ἀΐξας ἵπτατ' ἐπεσσύμενος,  
" Οἶμα δ' ἐρίμφα φέρει μετὰ τ' ἡθεα, καὶ δόμον εὐνής,  
" Τῆ ῥά παρ' οἷσι φίλοις κεῖτ' ὀλιγηπελέων,  
" Ὡς οἶμησεν Ἄναξ βεβολημένος ἄλγει λυγρῶ,  
" Πρὸς Βασιλείαν ἰὼν κυδαλίμην ἄλοχον,  
" Ἄλλοτε μὲν τ' ὀχέεσσι φορεύμενος, ἄλλοι' ἐφ' ἵππου,  
" Καὶ ποτε πεζοπόρος, φαίδιμα γυῖα ῥάων.

~~~~~  
Δεῖβετε Ῥωσσιάδες τῶ πένθει δάκρυα Μοῦσαι,  
" Κἄκ λυγρῶν σομάτων οἰκτρὸν ἀείσαι' ἔπος·  
" Ὡ ἦρως, ὦ ἌΛΕΞΑΝΔΡ', ἀλλά σέ γ' οὐποι' ἐλείπε  
" Ψυχῆς κρειούσης ἄτρομος ἠνορέη·  
" Οὐ κρυερή σ' ἐφόβισσε δυσσαοῦς χεῖματος ἄρη,  
" Εὔτε φάλαγγας ἄγες μᾶλλον ἐπ' ἀργαλέον·  
" Οὐ ποταμῶν λάβρον ὄλοδν σθένος, οὐς τ' ἐπέρησας  
" Ὡκυπετεῖ νίκης αἰρόμενος πτέρυγι·  
" Οὐ πληθὺς δηῶν, καὶ οὐ φλεγέθοντες οἷσοι,  
" Ἀμφὶς ἐρευγόμενοι πτορφύρεον θάνατον·  
" Καὶ νῦν ὀμβριμόθυμε νόσε βέλος εἶμι δεδοικὼς,  
" Ῥεῖ' ἔτλης ἀπάμας, ἔλκιμον ἦτορ ἔχων,

Да не сойдесть съ небесъ роса на горы дики,  
Нескладный вой вѣпровъ и свиспъ въ себѣ родящи,  
Гдѣ находясь съ своимъ народомъ АЛЕКСАНДРЪ,  
Герой былъ гибельнымъ недугомъ пораженъ.  
Какъ ядоносною орель спрѣлой пронзенный,  
Вспорхнувъ, съ поспѣшностью лепить пунемъ, который  
Скорѣи несетъ его домой въ свое гнѣздо,  
Гдѣ ослабѣвъ, среди своихъ кончаетъ жизнь;  
Такъ быспро Царь спѣшилъ болѣзнию уязвленный,  
Къ Державнѣйшей своей супругѣ и Царицѣ,  
То колесницею, по пѣшій, по верхомъ,  
Дражайши члены шѣмъ желая укрѣпить.



Пролейте шюки слезъ, пролейте Росски Музы,  
И гореспную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ:  
О АЛЕКСАНДРЪ, Герой! безпрепешная швердоспъ  
Средь холодовъ шебя нигдѣ неоспавляла,  
И мразь ужасныхъ зимъ Тебя не успрашала,  
Какъ полчища съ Собой въ враждебну брань водила;  
Ни гибельный порывъ рѣкъ быспрыхъ и ужасныхъ,  
Чрезъ кои былъ несенъ побѣдой быспрокрылой;  
Ни множеспво враговъ, ни спрѣлъ разженныхъ огнь,  
Носившихъ для Тебя ужаснѣйшую смерпъ.  
Великій и шеперь болѣзни не боялся,  
Герой шерпѣлъ легко, грудь швердую имѣя,

Θαρσύνων Βασιλείαν ἐπήρατον, ἢ σε ποιοῦντα  
Ἵς ἴδεν, ὡς ἀνέπαλτ', αἰνὰ δεδισσομένη.  
Καὶ δ' ἄρα Μητρὶ φίλῃ, πινυτόφρονι, εὐρυανάσση,  
Ἐσθλὰ γράφων προΐεις, ἦκα παρηγορέων·  
Κηδόμενος, μὴ σοι ἀγαθὴ Μήτηρ ἀκάχηται,  
Τηλόθι πευθομένη υἱὸς ἐοῖο πένον.

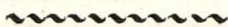


Λεῖβετε Ῥωσσιάδες τῷ πένθει δάκρυα Μοῦσαι,  
Κᾶκ λιγυρῶν σομάτων οἰκτρὸν ἀείσατ' ἔπος·  
Ἵς ἴτε, βᾶτε, θύρας Ἱερεῖς τάχος οἴγετε ναῶν,  
Ἵς ἴτε λαὸς ἅπας σὺν θυέεσσιν ἀγνοῖς·  
Ἦνιδ' ἐρισθενέος βασιλῆος πότνια μήτηρ  
Εἶδ' ἰλασσομένη μελιχίοισι θεόν·  
Οὔνεκά οἱ τριλλισος ἀφ' υἱέος ἄγγελος ἦλθε  
Δεύτερος, ἀγγέλλων ῥᾶον Ἄνακτ' ἐχέμεν.  
Ἵς δὲ φίλῃν τετριγότες ἀμφὶς ἔχουσι νεοσσοὶ  
Μητέρ', ὑπ' ἡελίου αὐγᾶς ἀγειρόμενοι,  
Ἵς μέθεπον Βασιλείαν ἀγακλῆος ἐνδοθι νηοῦ  
Πετροπολιτᾶων δῆμοι ἐπευχόμενοι.  
Ἦ δ' ὕμνοισι γέραιρε Θεὸν μέγαν, εὐφρόσυτος κῆρ  
Ἵς ἐπὶ σκηπτούχῳ υἱὶ σωζομένῳ.  
Ἄλλ' ἄρα κᾶξ αἰθρῆς βαρῦς ἔκτυπεν αἴψα κεραινός,  
Κῆν θαλῆαις γλυκεραῖς λιγρὸν ἐσήλατ' ἄχος!





И нѣжную свою Царицу упѣшала,  
Въ спрахъ впадшую, когда узрѣла пвой недугъ;  
И МАТЕРИ Своей и мудрой и любезной  
Писаль опраду лишь и нѣжно упѣшенье,  
Дабы дражайшая не сокрушалась МАТЬ,  
Узнавъ издалека, что боленъ Сынъ ЕЯ.



Пролейте поки слезъ, пролейте Росски Музы,  
И гореспную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ:  
Спѣши священныхъ сонмъ, и храмы опвержайте,  
Чистѣйшія народъ неси съ собою жерпвы.  
Се МАТЬ Почтенная великаго Царя,  
Идешъ благодарить молишвою Творца,  
Что вѣспникъ радоспный пришелъ вторый съ извѣспьемъ,  
Что легче сдѣлалось болящему Монарху.  
Какъ мапери своей вокругъ кричащъ пшеницы,  
Копоры собраны подъ солнечны лучи:  
Съ Царицей Маперию народъ шакъ Пешпрограда  
Молилса Небесамъ въ великолѣпномъ храмѣ.  
Она же пѣла пѣснь опъ радоспи Творцу,  
Что лучше чувспвуешъ Державный Сынъ Себя....  
Но громы сильныя и въ ведро ударяющъ,  
И шерніе средъ розъ веселыхъ возраспаешъ.



Λείβετε Ῥωσσιάδες τῷ πένθει δάκρυα Μοῦσαι,  
Κὰκ λιγυρῶν σομάτων οἰκτρὸν αἶδειτ' ἔπος·  
Κυδίση Βασίλεια, Σὲ δ' ἐς νεῶ ὄρμον ἔτειμε  
Κῦμα μίγ' ἀγγελίης υἱέος οἰχομένου!  
Οὐ πῶ πᾶς τετέλεσο βαρυφθόγγων νόμος ὕμνων,  
Καὶ μελανοπτέρυγος δεινὸν ἔκλαγξε φάτις·  
„Κεῖται ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΣ· τέθνηκέ τοι υἱὸς Ἀνασσα  
„Τέτλαθι. καὶ βουλαῖς εἶκε Θεοῦ μεγάλου.“  
Ὡς δ' ὄτ' ἐν Οὐρανῷ ἡελίου φάος ἐξαπόλωλεν  
Ἐξαπίνης, ἀχλὺς δ' αἶαν ἐπῆλθεν ὄλην·  
Ἦχλυσεν δὲ θάλασσα· βαρεῖς δ' ἐπέβρισαν ἀῆται·  
Κύματα δὲ τροφθέντ' ἀκτῆ ἐπιβρέμεται·  
Ὡς ἤχλυσε πρόσωπα καὶ ὄμματα φαιδρὸν ὄρωντα,  
Παχνώθη δ' ἦτορ Μητρὸς ἀνακτορίης.  
Ἄν δὲ βαρυξενάχουσα πρὸς οὐρανὸν εὐρὸν ἄειρεν  
Ὅμματα καὶ κεφαλὴν, τλήμονα φθεγξαμένη·  
„Κοίρανε παμμεδέων, πάντων ὕπατε κρειόντων,  
„Σὺ ζώντων κρατεῖς· Σοῦ δ' ἰότητι μόρος·  
„Σοὶ δ' ἀρ' ἐγὼν ὄφειλον ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΝ φίλον υἱόν,  
„Τὸν ῥα χοροσασίην ἤρπασας ἐς μακάρων·  
„Ἄλλ' Ἀνα ὑψιμέδων τόδε μοι κρήνην ἐέλωρ·  
„Νῦν μετ' ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ καὶ ἀνάειρον Ἀναξ!“  
Ἦ ῥα καὶ ὀφθαλμοῖν ἴει ῥόον, ἦύτε κρήνη  
Ῥεῖ μελάνυδρος ἄχνην ἀργυρέης λιβάδος.  
Λαοὶ δ' ἐξόμωξαν ἀολλέες, ἄλλοθεν ἄλλος,  
Ἰαχε δὲ νηοῦ βάθρ' ἐλελισσόμενα.

Пролейте шоки слезъ, пролейте Росски Музы,

И гореспную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ:

Царица славная! вѣспь о кончинѣ сына

И храма въ приспани Тебя волной сразила,

Еще не кончился обрядъ и гимновъ звукъ,

Какъ чернокрылая вдругъ завопѣла Вѣспь:

«Скончался АЛЕКСАНДРЪ, почилъ Твой сынъ, Царица!

Терни, и Божескимъ совѣшамъ покарайся.»

Какъ на небѣ когда свѣспь солнца бы исчезъ,

И цѣлая земля покрылась пьмой густой;

И Поипъ бы зашумѣлъ, и вѣспры бурны дули,

И горы волнъ дробясь, гремѣли вмѣстѣ съ бурей:

Померкли очи никакъ и свѣспилое лице

Царицы Машери, и взволновалася грудь.

Спеняща, къ Небесамъ свои возводишь очи,

И гласомъ жалоспнымъ всѣмъ въ слухъ провѣшчаваешъ:

«Верховный Царь Царей и Повелишель всѣхъ!

Живущихъ держишь Ты, въ Твоемъ велѣнни смертъ;

Ты даль любезнаго мнѣ сына АЛЕКСАНДРА,

Копораго евяспыхъ въ селенія восхипиль,

И нынѣ соверши желаніе мое,

Прими, Царь, и меня шуда, гдѣ АЛЕКСАНДРЪ.»

Рекла: и вдругъ, пошокъ какъ будшо бы глубокій,

Съ спремлевьемъ хлынули изъ глазъ сребриспы слезы.

Собравшійся народъ повсюду зарыдалъ,

И храмъ молишпенный во сводахъ заспоналъ.

Ἄν δὲ φθόγγον ἔηκεν ἀνάκτορα πένθιμον, ὄξυν,  
Χρυσέων ἐκ τεράμων, αἴλινα κεκριγότα,  
Ἐμμερεφῆ, κηῶδ', ἀριπρεπέως φαέθοντα·  
Νῦν δ' ἄρα κυανέοις ἀμφιέσαντο πέπλοις.



Τοῖός τοι Πετρούπολις, ἤϊξ' ἄγγελος ὤκεις,  
Οἶτον ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ, πῆμα κακὸν, κυλίων·  
Φθῆ δέ μιν ὁ πρότερος μάλα τυτθὸν, ὅς ἤγγελεν ἐσθλά,  
"Ὅσσον ἀέξει ἄχος προπροκυλινδόμενον.  
"Ὡς ἄρα θνητοῖσιν βαρυγούνατος ἔρχεται ὄλβος,  
"Αἴτη δ' ἐξοπίσω ἔσπεται ὀκνυτάτη!  
Ἦ γὰρ ὁ μὲν λάφησεν ἀπ' ἐκ νόσου οὔτι μάλα δὴν,  
Δῖος Ἄναξ, ὅσσων δ' ἦκε σέλας λιπαρόν·  
Ἄλλὰ μιν αἴψα κακὸν παλινόρμενον ἵκετο αὔτις  
Νήκεσον κρατερῶς, νηλεές ἦμαρ ἄγον·  
Ἦτ' ἄφαρ θράσκουσ' ἀναδέδρομεν ἕσατον αἴγλη  
Λύχνου σβεννυμένου, αἴψα δ' ἔπειτ' ἔθανεν·  
"Ὡς λαμπὰς βιότοιο μεγασθενέος Βασιλῆος  
Ἐκ κνέφαος λάμπασ', ἔσβετο ἐξαπίνης.



Δεῖβετε Ῥωσσιάδες τῷ πένθει δάκρυα Μοῦσαι,  
Κἄκ λιγυρῶν σομάτων οἰκτρὸν αἰδεῖτ' ἔπος·  
Οὐδέ σ' ἄφρασον, Ἄναξ, θάνατος κίχεν· αἴψα δ' ἔριξας,  
"Ἄσσα τ' Ἄναξι θέμις, πάντεσι τ' εὐσεβέσιν.

Черпоги Царскіе звукъ издали плачевный,  
Изъ куполовъ злшпыхъ болѣзненно взывая,  
Высокихъ, блещущихъ великолѣпьемъ прубъ,  
Копорыя шеперь покрылись черношой.



Таковъ-шо прилетѣлъ въ Пешрополь вѣспникъ скорый,  
Скорбь злюю принеся о смерти АЛЕКСАНДРА.  
Съ пріятной вѣспію едва лишь предварилъ,  
Умножилъ чшобъ за нимъ принесшюся скорбь.  
Такъ! шастіе идешь, какъ бы въ цѣпяхъ желѣзныхъ,  
Нещастіежъ во слѣдъ, какъ вихрь, ему несешся.  
Божешвенный Царь рекъ, чшо лучше ужъ Ему,  
Но съ словомъ свѣшлый лучъ надежды улешѣлъ.  
Немедленно къ Нему боль злая возвратилась,  
Принесши люшый день, послѣдній, невозвратный.  
Какъ будшо слабый огонь у гаснущей свѣщи  
Подъемлясь вверхъ, вспыхаль, и шопчасъ исчезаль:  
Свѣшпильникъ жизни шакъ Царя великодушна  
Сквозъ шьму просіяваль, и шамъ погасъ мгновенно!



Пролейте шюки слезъ, пролейте Росски Музы,  
И горешпную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ.  
Но смерть пришла къ Царю не вдругъ и не случайно,  
Свершивши наконецъ, чшо всѣмъ Царямъ надлежитъ.

- Οἷα δὲ κύκνος ἄεισε μέλος θανάτοιο γοεδνόν,  
Τοίη ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ γῆρας ἴει λιγέα·  
„Χαῖρέ μοι ὦ Βασίλεια ἙΛΙΣΣΑΒΕΤΑ μεγάθυμε·  
Νῦν σ' ἐπὶ γῆς ὀρώω ὕστατα καὶ πύματα·  
„Οὐκέτ' ἀνακτορέοιο ἐπὶ θρόνου ἠνία λαῶν  
Πάρ σοι νομήσω χεῖρεσιν εὐσεβέσιν·  
„Οὐδ' εὐεργεσίας πολυγηθέα πάντεσι καρπὸν  
Ἄφνειῃ παλάμῃ ἄμφω ἐπομβρίσομεν·  
„Οὐδ' ἔτι μοι σκήπτρων οὐδὲν μέτα, ἔδέ τε γαίης,  
Οὐδέ μεν ἡελίου, οὐδέ τεῶν φαέων·  
„Πάρ γάρ μοι θάνατος πέλας ἔσχη'· εἶμι δ' ἐπ' οἶμον  
Ξυπὴν πᾶσι βροτοῖς, χρεῖος ὀφειλόμενον·  
„Ἄλλ' ὦ Ἄνασσ' αἰδοίη, ἀγακλεές, ἄκρον ἄωτον  
Ἱμεριτῆς σοφίης, ἀθανάτου τ' ἀρετῆς·  
„Θνητά τοι ἐν θνητοῖσι πεπόνθαμεν, οἶσθα καὶ αὐτή·  
Τέτλαθι, μνησαμένη αἰδίου βιότου·  
„Λύχνου λαμπομένου φλόξ ἴεται αἰθέρα διόν·  
Ῥεύματα δ' ἀέναον μαίεται Ὠκεανόν·  
„Ἡέλιον δ' ἀπίς μετανίσσεται ἄψ ἀπὸ γαίης·  
Ὡς καὶ ἄμμες ἴμεν πρὸς Θεὸν ἀθάνατον,  
„Νῦν μὲν ἐγὼ πρῶτον, μετὰ δ' αὖ σὺ γε, ὀππότε κέν δη  
Μοῖραν ἀναπλήσεις οὐλομένου βιότου·  
„Νῦν δ' ἄγε μοι πυμάτην τεοῖς ζέφνοις δέχυσ' αὐτμίν,  
Καὶ σεῖλόν με φίλον νεκρὸν ἙΛΙΣΣΑΒΕΤΑ.  
„Ἡ γάρ μοι θεόθεν χάρις ὕστατον ἦλθ' ἐπὶ γαίης,  
Σὺς ἀγκῶς δραθέειν ὕπνον ἀθανασίης,

Какъ лебедь видя смерть, печальну пѣснь поешь:

Такъ сладкій слышанъ былъ и АЛЕКСАНДРА гласъ.

«Великодушная прости ЕЛИСАВЕТА!

Въ послѣдній нынѣ разъ я на Тебя взираю;

«Не буду болѣе на Тронѣ при Тебѣ,

Руками правыми держащъ бразды людей.

«Не будемъ болѣе плоды благодѣяній

Мы вмѣстѣ разсыпанъ богапою рукою.

«Нѣтъ больше для Меня участія въ земли,

Во свѣтѣ, въ мѣрѣ семь, ниже въ очахъ Твоихъ.

«Мнѣ смерть здѣсь предстоитъ, въ пупъ общій я собрался,

Гдѣ смертные идутъ отдасть свой долгъ сясщенный.

«Царица кропкая! прекрасный верхній цвѣтъ

Любезной мудрости, неслѣнной доброты,

«Ты вѣдаешь Сама, что смертнымъ смерть прилична;

Терпи, безсмертіе всегда имѣя въ мысли.

«Свѣшпильника огонь уходишь къ Небесамъ,

А рѣки падаютъ въ безмѣрный Океанъ,

«И солнечны лучи идутъ назадъ опселѣ,

И мы къ Безсмертному опять опходимъ Богу.

«Теперь Я опхожу, а нѣкогда и Ты,

Долгъ жизни временной подобно всѣмъ отдашь.

«Прими вздохъ опъ Меня послѣдній въ Твое сердце,

И нѣжнаго укрась Супруга послѣ смерти.

«Съ небесъ послѣдняя сія Мнѣ радость здѣсь

Въ объятіяхъ Твоихъ безсмертнымъ сномъ заснушь,

\* \*

- „Σῆαι δ' ἑμοζυγέεσαι καὶ εὐσεβέεσσ' ὑπὸ χερσὶν  
    "Ομματα καμῦσαι κόσμου ἀφιπτάμενος.
- „Χαῖρέ μοι ὦ Βασίλεια· καὶ ὃν φιλείεις παρακοίτην  
    Δῆεις ἐν μακάρων, εὔτε Θεὸς καλέσει·
- „Χαῖρέ μοι ὦ ΜΗΤΕΡ, πολυφίλτατε, πέννια ΜΗΤΕΡ,  
    Ἐκ θανάτου λέκτρων ὕστατα νῦν σ' ἐνέπω.
- „Ἄλλὰ σὺ γ' οὐκ αἴεις παιδὸς ὄπα, τῆλ' ἀπεοῦσα,  
    Οὐδέ μεν ὄμμα βίου σβεννύμενον δακρύεις.
- „Οὐδέ σέθεν χεῖρας μενοεικίας, ἠπιόδωρε,  
    Θνήσκουσιν κύσω χεῖλεσιν ὑσάτιον.
- „Ἄλλὰ καὶ ὡς αἰνέω σε, φίλη ΜΗΤΕΡ, μεγάθυμε,  
    Τῶν ῥά μ' ἔδρας πολλῶν καὶ μεγάλων ἀγαθῶν·
- „Νῦν δ' εἶμι, τρίλλιζε, φίλος γε φίλους παρὰ πηοῦς  
    Εὐσεβέας, ΜΗΤΕΡ, πάντας ἐποψόμενος,
- „Δάματ' ἐς ὑψιμέδοντος ἀκήρατα, ἐνθ' ὑγέρονται  
    Πᾶσαι ἀειζῶων εὐσεβέων γενεαί.
- „Ἐς τε δ' ἄρ' ἡελίους, καὶ τεῖρεα παμφανόωντα  
    Οὐρανὸς εἰλύσσω ἀμφιπεριζέφεται,
- „Ρίζα σέθεν παλάμησι Θεοῦ μεγάλαις ἀραρυία,  
    Οἴσει Ἑρωζολάνων Κράντορας ἠνεκέως.
- „Νῦν δ' αὐτὴ τε τλήθι, καὶ ἄλλους μείλισε γνωτοῦς,  
    ΜΗΤΕΡ, σοῖς ἐπέεσσ', ἀχνυμένους ἐμέθεν.
- „Χαίρειτ' Ἄνακτες, Ἄνασσαί, ἀδελφεοί, ἠδέ τ' ἀδελφαί,  
    Αἶ τε υἱοὶ, τέκνων τ' ἄνθεα κουροτέρων·
- „Πατριῇ τριπόθητε, μεμηλυῖ' ἀμφ' ἀρεταῖσιν,  
    Αἵματος ἐξ ἀγαθοῦ ὄλβιοι ἀκρέμονες.



«И подь священными супружескиа руками

Сомкнушь на вѣкъ глаза, на небо оплешая.

«Проспи, Державная! Супруга Своего

Найдешь, какъ Богъ Тебя къ блаженнымъ воззовешъ.

«Проспи Дражайшая! проспи почтенна Машерь!

Со смертнаго одра къ Тебѣ шеперь зываю :

«Не узришь болѣ сыновняго лица,

И мрачныхъ глазъ слезой его не оросишь.

«И я, о Радоснь Чадо! Твоей руки нѣжнѣйшей

Не буду лобызани поблекшими усами,

«Хопя и чувствую, великодушна Машь,

Твои великія и многи блага Мнѣ.

«Къ любезнымъ предкамъ я, дражайшая, спремлюся,

Чпобъ съ ними всѣхъ узрѣшь и прочихъ благовѣрныхъ,

«Куда сонмъ праведныхъ на вѣчну жизнь сберешся,

Гдѣ будемъ купно всѣ блаженствомъ наслаждаться.

«Доколѣжь солнечны, иль звѣздные міры

Вращаются спезей окружной въ небесахъ,

«Твой родъ, хранящійся на крѣпкихъ Божьихъ дланяхъ,

Твоихъ Владыкъ во вѣкъ давашь Россіи будетъ.

«А нынѣ, Машь, шерпи, и сладоспью словесъ

Смягчи боль присныхъ намъ, скорбящихъ обо Мнѣ.

«Проспите брашя Князи, Царевны сеспры,

Невѣстки Царскія и юноснь чадъ цвѣнущихъ,

«Сѣмейство милое, питомцы доброшы,

Попомки щаспливы ошъ чиешой крови всѣ.

- „Ζώητ' εὐθαλείες, μετὰ δὲ σφέων ἀγλαΐῃσι  
Μνήσθε ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ, ἄτροπον οἰχομένου!
- „Χαῖρ' ἱερῆς Συνόδου ἀγνὸν σέβας, ἔμπεδον αἰεὶ  
Θέσφατα ῥυομένης, τέθμια τ' εὐσεβίης.
- „Χαίρει' ἀριπρεπέες Βουλευφόροι, οὓς ῥά τ' ἀρωγούς  
Εἶσα φυλασσομένους σεμνὰ δίκης θέμεθλα·
- „Πάντες θ' Ἠγεμόνες βριαροὶ, κρατεροὶ τε φάλαγγες  
Ἀνδρῶν αἰχμητέων, ἔρκος Ἀνακτορίης,
- „Τῶν μετὰ πόλλ' ἐμόγησα, ἀμυνόμενος περὶ πάτρης,  
Πολλὰ δ' ἔοργα τρόπαι οὐκ ἀέκητι θεοῦ·
- „Νῦν δ' ἄρ', ἐμοὶ συνέριθοι ἀτειρέες, μῦνος ἄπειμι  
Δώματ' ἐς Εἰρήνης· χαίρετε ὑσάτιον.
- „Χαίρει' ἐμῷ σκήπτρῳ δεδμημένα μυρία λαῶν  
Ἔθνεα, τέκνα φίλοι, δῆμοι ἀπειρέσιοι,
- „Τρισσὶν ἐπ' ἠπείροισι δεδασμένοι, οἷσιν ἀνασσον  
Πέντε καὶ εἴκοσ' ἔτεα, ἥπιος ὥσε πατήρ·
- „Ἐν δὲ τοσῶδε χρόνῳ, τοσσαῖςδὲ τε μυριάδεσσιν  
Οὐδένας ἀμφιέσασθ' ἐξ ἐμέθεν μέλανα·
- „Ἀσπίδα δ' ἀμφὶς ἔχοντε, καὶ ἰθύοντε θέμιστας,  
Πᾶσιν ἐφρασάμεθα μηδὲν ἀεικὲς ἔχειν.
- „Ἕμεῖς μὲν δὴ χῶραι, καὶ ἔθνεα χαίρετε λαῶν,  
Καὶ Ῥῶσσοι κρατεροὶ, δουρικλυτὸς τε Πάτρα.
- „Εὐάνδρος, πολυάνδρος, ἄδρεπτον τ' ἄνθος ἔχουσα  
Ἡβῆς ναιετάοις αἰὲν ὑπ' Εὐνομίῃ!
- „Ἡμεῖς δὲ νεόμεσθα πάτραν μακάρων ἐρατεινὴν,  
Πλήσαντες μοῖραν θευμορίου βιότου.

«Живите безъ скорбей, и въ радостяхъ рекише :

Къ намъ больше АЛЕКСАНДРЪ сюда не возвратится.

«Проспи Свяшый Синодъ, Священнѣйшій Синклишъ,

Что Вѣру и законъ божественный блюдушъ.

«Проспи Совѣтъ и Сонмъ мужей спарѣйшинъ славный,

Которы пвердоспъ правъ священныхъ сохраняющъ.

«Проспите храбрые Вожди и сильна рать,

Твердѣйши полчища — опечеспва оплопъ,

«Съ копорыми пруды я раздѣлялъ военны,

И власшю Божеской профей многи спавиль.

«Неупомимые сопрудники мои,

Проспите, нынѣ Я къ покою опхожу.

«Проспите пысащи, подъ Скипиръ Мой покоренны,

О чада милыя! безчисленны народы,

«Разсѣянны вездѣ на прехъ часпяхъ земли,

Былъ коимъ Я Опецъ чрезъ двадесать пять лѣтъ,

«И коимъ въ спюлько лѣтъ, и въ сполькихъ муріадахъ

Собой не заспавлялъ носить одежду черну.

«Держа въ рукахъ и щипъ и праведны вѣсы,

Неправду Я опъ всѣхъ спарался опклоняпъ.

«Проспите всѣ мѣста, безчисленны народы,

Вы Россы пвердые, Опечеспво побѣдно,

«Гдѣ много Вишязей и юношеспва цвѣтъ

Всегда подъ мудрыми законами цвѣпешъ.

«Въ любезное иду опечеспво блаженныхъ,

Свершивъ здѣсь свой удѣлъ опъ Бога данной жизни.

„ Ἄλλ' οὗτοι λαοῖσι πατρὸς ποθὴ ἴξεν' Ἄνακτος·

Τοῖον ἐπ' αὐτοῖσι Κράντορ ἐμῆσάμεθα!

„ Χαῖρε ἌΝΑΞ μεγάθυμε, ἐμοῖσι πόνοισιν ἀμοιβέ,

Φίλε κασιγνήτε, κλειὸς Ἄνακτορίης·

„ Νῦν μὲν ἔγωγε κάτειμι ἀπὸ θρόνου ἔνδοθι τύμβου,

Πρὸς Θεὸν ὑψιμέδοντ' ἔνθεν ἀνιπτάμενος·

„ Αὐτὸς δ' αὖτ' ἀνάβαινε μονοσκήπτρος ἐπὶ θώκους,

Πασέων Ῥωσσιῶν παγκρατέως κρατέων·

„ Σῆ κεφαλῇ τοι ζέμμα πατρῴϊον εὐκλεές αἰὲν

Ἔρχεται ἐξ ἡμέων νεύματι θεσπεσίῳ.

„ Σοὶ χάσις εἶκε θρόνου ΚΩΝΣΤΑΝΤΙΝΟΣ μέγας ἥρωσ,

Προσβύτερος γενεῆ, τοῦ κλέος ἀθάνατον·

„ Σοὶ δ' ἐπιτεράφεται λαοὶ τόσοι, οἳ ῥά τε πάσης

Γαίης τὴν δεκάτην μοῖραν ἔχουσι ὄλην·

„ Ἄγρει μὰν πολέων Βασιλέων Βασιλεῦ διαδέκτωρ,

Ὅβριμε ὀβρίμων, εὐσεβὲς εὐσεβέων,

„ Σκῆπτρον ἔχων δῆμοισι θεμίζευ· ἀμφὶ δὲ μηρὸν

Φάσγανον ἀμφιβαλὼν πάτραν ἀκμήτια σάω.

„ Ὀλβιος, ὅς λαοῖσιν αἶτ' οὖν τεκέεσσιν ἀνάξεις,

Οἳ δὲ πεποιδήσουσ' ὡς πατρὶ Σοὶ γλυκερῶ!

„ Ὀλβιος, ὅστ' ἐσθλοῖσιν ἐπ' ἔργμασιν ὑψι βιβάσθων,

Σωτήρ κεκλήση, καὶ μέγας Βασιλεύς!

„ Ὀλβιος, ὅς τελείεις τὰ τ' ἐέλδομαι ἤματα πάντα,

Ῥυόμενος δηῖων εὐσεβέας συγεράων!

„ Αὐτὸς δ' Ἐψιμέδων, ᾧ Ῥώσσιων ἀμφιμέμηλε,

Πανσθενὲς ἦς σοφίης Σαῖς φρεσὶ Πνεῦμ' ὀπάσει·

« Не плачьте обо Мнѣ, хоть былъ Я вамъ Отецъ,  
Когда мы о пакомъ пеклись для васъ Царѣ.  
« Привѣспствую ТЕБЯ, моихъ прудовъ преемникъ,  
Единокровный Братъ, и царства Россовъ слава!  
« Со Трона Я схожу по степенямъ во гробъ,  
Чшобъ въ небо оплешѣть къ Верховному Царю.  
« Но Ты возсядь на Нашъ престоль единосипирный,  
И всей Россіею державспвуй вседержавно.  
« Опеческій вѣнецъ, несплѣнный навсегда,  
Отъ Бога на Твою возносптся главу.  
« Великій КОНСТАНТИНЪ, Герой, братъ спаршій родомъ,  
Безмерпный славою! престоль Тебѣ предаль.  
« Тебѣ во власп сїи народы опданы,  
Чшо десяпью часпей владѣюсп всей земли.  
« Гряди, о Царь! Царей преемникъ сильныхъ сильный,  
И пвердыхъ вѣроу Наслѣдникъ Благовѣрпый!  
« Гряди, и Сипепръ взявъ, народу судъ суди,  
И препоясавъ мечъ, Опечество храни.  
« Блаженъ, когда ТЫ въ немъ, какъ въ чадахъ, воцаришься,  
И Онъ, какъ бы Опцу, Тебѣ покорень будешъ.  
« Блаженъ, когда ТЕБЯ за доблесп и дѣла  
Спасишелемъ — Царемъ великимъ нарекушъ.  
« Блаженъ, коль давнїя мои желанья Ты исполнишъ  
И вѣрныхъ опъ враговъ злочеспныхъ свободишъ.  
« Да дасп ТЕБѣ Господъ, Россїанъ Попечисель,  
Имѣсп въ душѣ Своей премудрости духъ крѣпкій!

- „Καὶ σὺ μὲν ἔτω χαῖρε Ἄναξ· ἄλλοι τ' ἀγακλειτοὶ  
Σκηπτέχοι Βασιλεῖς, οἷς μεθομιλέομεν·  
„Αὐτοὶ καὶ βασιλεια, καὶ ἄσσα, καὶ ἔθνε' ἀνδρῶν,  
Καὶ ποταμοὶ, καὶ γαῖ', ἦν ἐπεληλύθαμεν.  
„Πέλλ' ἔδραμον, πόλλ' ἦνυσα, πολλὰ δ' ἐμείλλον ἔειθλα·  
Ἐπι' ἐπὶ τεσσαράκοντ' ἡλίους ἔδρακον·  
„Νῦν δ' ἐπὶ τέρμ' ἰκέμεσθα πολυπλανέος βιότοιο·  
Ἄραρ! ἄλις μόχθων! κόσμου ἀφίπτατ' ὄναρ!  
„Λεπτὸς μοι βιότου μίτος ἔρραγεν, ὡς δὲ ἔριθος  
Ἴσον ὑψημαμένη, ἐξαπέθριξε κρόκην!  
„Αὐτοκράτωρ μεγάδοξος, ἀνακτορέων ἀπὸ θάκων  
Τηλε' ἀποθνήσκω, ἄσεγος ὣσε πένης·  
„Σῶμα δ' ἐμὸν θήκη ψυχρὰ νεκρὸν οἶσει ὀπίσσω,  
Τύμβου ὁμοῖου πᾶσι βροτοῖς χατίον·  
„Τοῖός τοι φθινύθει βίωτος θνητοῖσι βροτοῖσιν,  
Ὡς περὸν, ὡς ἄνθος, ὡς ὄναρ οἰχόμενος!  
„Αὐχείτω τίς ἔπειτ' ἐπὶ κάρτεϊ, καὶ σθένει ᾧ,  
Καὶ σιβαρῆ παλάμη, καὶ κτεάτεσσιν ἀβροῖς.  
„Αὐχέεθ', αἶ τ' ἂν ὄρεσσιν ἀτίζετε ῥεῖα κεραυνὸς,  
Δρυὸς τανααί· καὶ ὄρη, ἄερασι πιλνάμενα!  
„Φθείσθαι πάντ' ἐπέοικε, τὰ μὲν πρόσω, ἄλλα δ' ὀπίσσω,  
Οἷη δὲ ψυχὴ ἔμμορ' ἀθανασίης.  
„Ἀλλὰ μοι ὄμμα δύνει· περὶ δ' ἄψευα πάντα μαράνθη·  
Σβεννυμένης δ' ὕσσης τυτθὸν ἀποπνέομεν.  
„Χαῖρέ μοι ὑσάτιον γλυκερὸν φάος ἡελίοιο,  
Εἰλίοντος χρυσέοις ἀμφὶ δίφροισι γλόγα.

«Проспи, о Царь! и Вы Божественны Цари,  
Союзники мои со скиптрами въ рукахъ.  
«Проспите Царства всѣ, и грады и народы,  
И рѣки и земля, стопы мои гдѣ были.  
«Я много испыталъ, и сдѣлалъ, и хопѣлъ,  
Какъ Солнце, обошелъ мѣръ сорокъ восемь разъ.  
«Но нынѣ наступилъ конецъ прелестной жизни;  
Довольно для меня — прочь, прочь леши сонъ міра.  
«Нипъ спонка жизни сей совсѣмъ перервалася,  
Какъ пикущая когда опрѣзала бѣ ушокъ.  
«Великославный Царь опъ Трона вдалекѣ,  
Какъ бѣдный будшо бы свою кончаю жизнь!  
«И пѣло мершное придешъ во гробѣ хладномъ,  
Искашь себѣ одной могилы, смершныхъ общей.  
«Вопъ исчезаешъ какъ у смершныхъ смершна жизнь,  
Какъ будшо бы полешъ, иль цвѣшъ, или какъ сонъ.  
«Теперь пусть хвалишся кпо крѣпостью и силой,  
И пвердой мышцею, имѣніемъ несчешнымъ.  
«Хвалишесь на горахъ, смѣясь громамъ дубы,  
И горы, что собой касаетесь небесъ.  
«Всему должно исплѣшъ, иль прежде или послѣ,  
Единая душа безсмертія причасна!  
«Но мракъ въ очахъ, все вянешъ у Меня,  
Гласъ прерываеися и Я едва дышу.  
«Проспи въ послѣдній разъ сладчайшаго свѣшъ солнца,  
Вращающаго огнь златой на колесницѣ.

- „Νῦν σὺ μεσουρανεῖς, καὶ εἰ δύσσαι, αὔριον αὐτίς  
    Ἦξεις ἀντολίην, ἦλιε φίλε, νέος·  
„Αὐτὸς δ' ἐν νεκύεσσιν ἐπὴν δῶ, ἐκέτι γαῖαν  
    Αὐτίς ἀναΐξω, τύμβον ἐφεσσάμενος·  
„Οὐδέ σε χρυσαυγέοντα Πετρέπολιν ὄψομαι, ἔνθα  
    Νυκτὶ ἐπερχομένη ἀντεβόλησεν ἕως·  
„Ἀντολίην δὲ Δύσις προσέειπεν, γείτονα γείτων,  
    Μήνη δ' ἀργυρῆ τηλόθεν ἐξανέχει.  
„Ἀλλὰ τίη χθονίων θυμὲ πτερύγεσσιν ἐπέχρας;  
    Ἴομεν ὀψόμενοι ἄδδυτον Ἡέλιον.  
„Ὡς δὲ πρὸς ἡλίου πηγὰς ἤϊξε χελιδῶν,  
    Χείματος ἐκφεύγεσ' ἀργαλῆς νιφάδας.  
„Ὡς αἶψα προλιπέσα πολύξονα πῆματα κόσμου,  
    Πρὸς πηγὰς ἀπλέτου, ψυχῆ, ἴεσο φάους!  
„Ὡ θάνατε, πρόμολε· ζωῆς νῦ μοι ἔπλεο κῆρυξ·  
    Ἄγγελος ἄμμι φίλος ἦκες ἀθανασίης·  
„Πρῶτον δ' εἰσορόω σε καὶ ὕσατα· σὲ γὰρ ὑφ' ἄρη  
    Δεισμὸν ἀποτιμήξας, εἴμι πρὸς ἀθανάτους.  
„Σῶμα δὲ τὸ βρότεον νεκρὸν νεκάδεσσι λιπόντες  
    Ἄφθιτον ἐκ νεκάδων αὐτίς ἐφεσσόμεθα.  
„Ἄλλ' ὦ Ἄνα θνητοῖσι καὶ ἀθανάτοισιν ἀνάσσων,  
    Τοῦ κάρτος τελέων ἐς τὸ τελειότατον·  
„Δέχνησο σὸν θεράποντα πολυπλάγκτου ἀπὸ κόσμου,  
    Τόν ῥ' ἐκάλεσσας ἄνω χῶρον ἐς ἀτρεκίης·  
„Ὡς καλιὴν τρίξσα τρυγῶν οἴμησεν ἰκέσθαι,  
    Ὡς σέθεν αὐλῆς, ἄναξ, κέκρυγ' ἀνιπτάμενος. —



« Ты нынѣ средь небесъ, и къ Западу уйдешь,

А завтра на Воспокъ любезное придешь;

« Но Я, какъ низойду въ сію спрану умершихъ,

Не выду изъ земли, въ могилу сокровенный.

« Тебя я не узрю, о Пешпроградъ злешый!

Гдѣ улыбаешься съ зарею вспрѣпшясь ночь,

« И Западъ, какъ сосѣдъ, привѣщешвуешь Воспоку,

А сребрена луна мелькаетъ издалека.

« Но что крылами, духъ, касаешься земли?

Пари, мы полешимъ свѣтъ неприсупный зрѣшь.

« Какъ ласпочка лешинъ шуда, испокъ гдѣ солнца,

Себя чшобы спасши опъ холода сурова:

« Такъ духъ, оставившій недавно скорбный міръ,

Свѣпила вѣчнаго къ испочникамъ наришь.

« Спѣши, о смершь! сюда, будь вѣспницею жизни,

Гряди съ безсмершиемъ ко мнѣ, любезный Ангель.

« Тебя я въ первый зрю, но и въ послѣдній разъ;

Твоей косой скошенъ, къ безсмершнымъ опхожу.

« А шѣло смершное землѣ оставилъ мершво,

Изъ смершнаго чшобы въ безсмершное облечься.

« О Царь! у Коего и жизнь и смершь въ рукахъ,

Держава Коего превыше всѣхъ державъ,

« Прими къ Себѣ раба опъ міра заблуждений,

Кошораго воззвалъ Ты испины въ селенья.

« Какъ горлица спѣшинъ въ гнѣздо свое спѣша:

Вываю такъ и Я, лепя въ Твои дворы. —

„Ἦδη μοι αἰῶνος ἀπειρίτων εὖρος ἀνίσχει·  
Αἰθήρ δ' ἐξεράγη· γαῖα δ' ὑπεκπροθέει·  
„Θεσπέσιον δ' ὀρώω βηλὸν πόλου οἰγομένοιο·  
Ἐκ δὲ θρόνου μεγάλου δόξα μ' ἄφαρ τέθαφεν! —  
„Ἄγγελ', ὃ γεινομένῳ μοι ἐπήλυθας ἐσθλὸς ἐταῖρος,  
Πάρ δε φύλαξ μίμνεις ἐκ λίκνε ἄχρι τάφου·  
„Λάξεο· ἡγέο μοι. — Κριτὰ πάτερ, ἴλαος εἴης·  
Ἦ Σῶτερ μερόπων ἴλαθι σεῖο λάτρει·  
„Εὐύλατος δ' ἐμβλεπον ἀπ' ἐκ θρόνου, ὡς ὅτε φύτλην  
Ἐκ Σταυροῦ βροτέην πλαζομένην ἔδρακες!  
„Σοὶ ψυχὴν, σοὶ δὲ φρένα, σοὶ δ' ἀφίημι μενοινήν,  
Σοὶ, τὰ μοι αὐτὸς ἔδως δῶρα, δοτὴρ ἀγαθῶν.  
„Σὸν καλὸν, εἴ τι ἔοργα· τὰ δ' ἠμίπλακον αὐτὸς ἔρεξα·  
Ἄλλὰ μ' Ἄναξ ἐλείαιθ', εἵνεκα σὺ ἐλέους.  
„Δίς δέ μ' ἐπαυρέσθαι βασιλείης· σῶζε τε πάντας  
Σεῖο λάτρεις πιεῖς, Δέσποτα, σῶζε πάτραν!“  
„Ὡς ἂν ἄναξ εἰπὼν κάρη ἤμυσ', ὅσσε δ' ἀπέσβη,  
Ψυχὴ δ' ἐκ ῥεθέων ἐρανὸν εἰσανέβη.



Λεῖβετε Ῥωσσιᾶδες τῷ πένθει δάκρυα Μοῦσαι·  
Κὰκ λιγυρῶν σομάτων οἰκτρὸν ἀείδει' ἔπος.  
Δίαι ἘΛΙΣΣΑΒΕΤΑ, σὺ δ' ἀνώμωξας περὶ νεκρὸν  
Πήχαι χευαμένη, καὶ ρ' ὀλοφυδνὸν ἔφης·  
„Μεῖνον ἈΛΕΞΑΝΔΡΕ, πόσι φίλτατε, μεῖνον Ἄναξ με·  
Τὴν ὁδὸν, ἣν τελείεις, ἄμφω ὁμῶς ἴομεν.

«Се зришся вѣчноспи воспокъ неизмѣримый,

Разносишся ээирь, земляжъ изъ глазъ сокрылась.

«Я вижу чудный прагъ опкрывшихся небесъ, —

И опъ пресполо свѣшъ сіяешъ на Меня. —

«Хранишель Ангель мой, копорый съ колыбели

До гроба другомъ былъ и вѣрнымъ мнѣ и нѣжнымъ.

«Возми, веди меня — о Боже Судія!

Испочникъ милоспи! Се рабъ Твой есмь, проспи.

«Со Трона на меня возри, о Избавишель,

Какъ со кресна Ты зрѣлъ на падшій родъ всѣхъ смеринныхъ.

«Тебѣ, Подашель благъ, я душу предаю,

И мысль и волю съ ней, копоры далъ Мнѣ въ даръ.

«Твое добро, мои лишъ полько заблужденья;

Будь милоспивъ ко мнѣ Владыко милосердый!

«Сподоби и меня во царспвіе приппи,

И вѣрныхъ всѣхъ Твоихъ — опечество спаси.»

Царь рекъ: склонилася глава, померкли очи,

Душа изъ шѣла вдругъ на небо воспарила.



Пролейте шоки слезъ, пролейте Росски Музы,

И гореспную пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ.

Тушъ зарыдала въ слухъ ЕЛИСАВЕТА славна,

И къ мершвому рекла, Свои просперши руки:

«Куда спѣшинь, Супругъ любезнѣйшій и Царь!

Пойдемъ мы вмѣспѣ въ пупъ, въ копорый Ты пошель.»

- „Τίς χρεῖω βιότου μοι ἄτερ σέθεν; ἔς τί δ' ἀν' οἰκτρὰν  
Κοιλάδα κλαυθμῶνος βείομ' ἐρημοτάτη;
- „Αὐτός γάρ μοι ἦσθα πατήρ, καὶ πότνια μήτηρ,  
Καὶ τέκνον γλυκερόν, καὶ πόσις εὐρυμέδων.
- „Σοὶ δ' ἐπὶ μένῳ ἔχαιρον ἐπήρατε· σαῖς δ' ἐπὶ κῦδος,  
'Αγλαΐην τ' εἶχον ὑψιθρόνοις ἀρεταῖς.
- „Αἶθ' ὄφελον προτέρη συγερῆς θανέειν ὑπὸ νέσῃ,  
Τῆς μ' ἀκέσασθαι, "Αναξ, κήδεο προφρονέως·
- „Νῦν δὲ σὺ μὲν κεῖσαι, μέγ' ἀνίκητ', αὐτὰρ ἔγωγε  
Ζῶω, κέφη σκιῇ, καὶ νέκυν ἀμφιέπω!
- „ἼΩ δέμας ἀβρόν "Ανακτος, οἷον σ' ἔχω! εὐκλέα μορφήν,  
"Ω μοι ἐμῆς ἄτης, δευομένην μένεος!
- „ἼΩ κάλλος βασιλείον, ᾧ ἔ μορῃ ἔχραεν ἄρηι,  
'Εν δ' ἔτι ἀνδρομέη ζεῖ θεθέεσθ' ἀδροτής.
- „"Οψεσθε 'Ρώσσων πολυπενθέων δῆμος ἰόντες,  
Οἷος ἄνεως ᾧ' ναξ ὑμμι πρόκειθ' ὄράαν,
- „"Ος ῥα σφέας ἔρρυντο, πατήρ δ' ὡς ἥπιος ἦεν,  
Πᾶσιν εὐφρονέων, πάντας ἐπισκοπέων·
- „Νῦν δέ μοι ὀρθόπολι, κρατεραλκίς, κεῖσαι ἄναυδος·  
"Οσσε δ' ὑπὸ βλεφάροις κάμυσσας, ὄμμα πάτρης!
- „Εἴδεις ἦτορ ἐμόν· κατὰ δ' εὐδετε καλὰ πρόσωπα,  
Καλὰ δ' ὑπ' ὀφρῦσιν νεύετε μελιχίαις·
- „ἼΗτ' εὐεργεσίας νόσος ἔνδον φρεσσί μενοινᾷ,  
"Οφεῖ δ' ἐκπροθέεσθ' ἀμφιπέδηλε χάρις·
- „Αὐδή θ' ἱμερόεσσα ἐπ' ἀκροτάτοις ἀνατέλλειν  
Χεῖλεσι μαιμῶσα, σήθεα καδδύεται!

« Чпо жизнь мнѣ безъ Тебя въ плачевной сей юдоли?

На чпо, жишь буду здѣсь съ Тобою въ разлученнѣ?

« Ты мнѣ опецъ и мапъ почщеннѣйшая была,

И чадо милое, Супругъ, великѣй Царь.

« Тобой, возлюбленный, единымъ упѣшалась,

И Царскихъ славой дѣлъ блестящихъ украшалась.

« О еслибъ прежде Я ошь боли умерла,

Копорую, о Царь, спарался излѣчить!

« Но нынѣ ТЫ почилъ, Герой непобѣдимый,

А слабая, какъ шѣнь, живу, Тебя собирая.

« О шѣло крѣпкое Царя! о горе Мнѣ—

Ужели образъ сей прекрасный безъ души!

« О Царска красота! смертью коей не коснулась,

О мужества огонь, еще кипящѣй въ членахъ!

« Приди, воззри на родъ скорбящихъ Россіянъ,

Се Царь, возрише всѣ, безмолвенъ предлежишь,

« Копорый васъ спасалъ, и какъ опецъ нѣжнѣйшѣй

Любилъ всѣхъ какъ дѣшей, внутрь сердца заключаа.

« Вопъ сильный градодержецъ, но гласа не даешь;

Ахъ! свѣшь опечесства подъ вѣждами закрышь!

« ТЫ крѣпко спишь, Драгѣй, а на лицѣ прекрасномъ

Рисуешься покой подъ шихими бровями.

« Мысль вѣрно о добрѣ содѣланномъ въ душѣ,

Ошь коей радости выходяшь на лицѣ;

« А рѣчь изъ сладкихъ успѣ по вырваться желаешь,

То въ грудь свою оная поспѣшно улещаешь.

- „ Ἄλλ' ἄνα, κῆν σιγάας, οἴμοι, θανάτοιο πεδηθεῖς  
Γλωσσαν μελιχίνην χαλκοβαρέσοι πέδαις,  
„ Οὐ μὰν σεῖο κλέος σιγήσεται· ἐς δ' ὄσον ἠὼς  
Φᾶς θνητοῖς ἐρέει, μνήσιν ἄλασον ἔχεις.  
„ Εἰδ' ἄγετ' αἰῶνές μοι ἐπαντέλλοντες ἐπ' αἶαν  
Δίον ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΝ κλείετε φθεγγόμενοι·  
„ Κῆν φρεσὶ, κῆν δέλτοις, κῆν μνήμασι, κῆν πτολίεσσι  
Θέσκελα τοῦδ' ἀνάγνωτ' ἔργα χαρασσόμενα,  
„ Τὴν τ' ἀγανοφροσύνην, τὰ τε μήδεα, δόσσα τ' ἔειδεν,  
Εὐσεβίην τε, δίκην τ', εὐνομίην τ' ἀγαθὴν,  
„ Καὶ δ' ἦτορ μέγαλον, μεγάλης μεῖζον βασιλείης  
Ἀρχῆς, τῆς περ ἄνασσο', ἦρ' ἐπὶ πᾶσι φέρων.  
„ Καρτερός αἰχμητῆς, ἄθλων πολέμοιο μεμηλώς,  
Φέροβων δ' εἰρήνης λήϊα λαοτρόφα·  
„ Ἄτροπος ἐν βελαῖσι καὶ ἔμπεδος, ἀλλ' ἐπιεικῆς,  
Οὐποτε νηλῆα ζήθεσι θυμὸν ἔχων.  
„ Ἦν Βασιλεὺς, φίλος ἦε, πατὴρ πάτρης τε καὶ ἔθνων,  
Ἦν μὲν πλέως φωτὸς, ἦν δὲ πλέως ἀγάπης.  
„ Τίς τ' ἂν πόντου ψίφους, καὶ χάριτας φατίσσαιτο  
Σὰς, ταῖσιν βιότου ζεῖβον ἔπασσας ἄναξ;  
„ Τῆνεκ' ἀγήραος ἔσση· τεῶ δὲ χρόνος περὶ τύμβῳ  
Θρέπει ὁ μυριετῆς ἄνθεα μνημοσύνης.  
„ Ἀλλὰ τίη θνητὰ θνητοῖς χεῖλεσιν ἀυτεῖν;  
Ἄμβροτ' ἈΛΕΞΑΝΔΡΕ! σὸν δ' ἐπέκεινα κλέος·  
„ Εὐτ' αἶαν σκιάσει μέλας ἥλιος, ἀμφὶ δὲ καπνῶ  
Οὐρανὸς ὡς δέροίς ῥάξειθ' ἐλισσόμενος·

« Хотя въ безмолвіи глубококомъ ТЫ, о Царь!

И цѣлью смертною окованъ Твой языкъ;

« Но будешь слава дѣль гремять, не умолкая,

Доколѣ свѣшь заря для смертныхъ возвѣщаетъ.

« Гряди, и множество прѣдбудущихъ вѣковъ

И АЛЕКСАНДРА славы божественнаго всѣмъ.

« Въ сердцахъ, на харпїяхъ, въ градахъ и мавзолеяхъ

Читай ЕГО дѣла велики начертанны.

« Се мудрый, кропкій духъ, который Вѣру зналъ

И правду и благой правленія законъ.

« Се грудь великая, и больше даже царства,

Которымъ управлялъ и доброе всѣмъ дѣлалъ.

« Былъ воинъ швердъ, и дѣль войны не оставлялъ,

Какъ мирныя поля къ посѣвамъ упучнялъ;

« Въ судахъ не измѣнимъ, но милоспивый сполько,

Что грудь ЕГО совсѣмъ жестокости не знала;

« Былъ Царь, былъ другъ, опецъ опечесства, народа,

Исполненъ свѣша былъ, исполненъ былъ любви.

« Благодѣяній здѣсь безчисленно число,

И ими жизнь Его усѣяна вездѣ.

« Не будешь Царь забвень, жипь будешь во всѣ вѣки,

Цвѣпъ памяти всегда на гробѣ Твоемъ будешь.

« Но смертное почто устами смертныхъ пѣпъ?

Безсмертныи АЛЕКСАНДРЪ! Тебѣ честь въ небесахъ.

« Когда пѣпъ черную, померкши Солнце бросишь,

Свѣпся же въ дыму и небо яко кожа.

- „ Σύν δ' αἰθήρ καὶ πόντος ὁμοῦ χθονὶ καὶ ἄερασσι  
Μίξετ', ἀμαιμακέτω ῥοίζω ἀναιθόμενα·
- „ Κοιρανέων δὲ δόμων, ὀρέων τ' αἰπεινὰ κέρηνα  
Δικμήσει λαΐλαψ θέσφατος, ἤϊτ' ἄχνην·
- „ Βρασσόμενοι δὲ τάφοι νεκρῶς ἀνέσσειν ὀρώντας,  
Καὶ χρόνος, ἐδὲ τόπος ἔσσεται, ἐδὲ μίρος·
- „ Τῆμος, Ἄναξ, λάμπεις πανακήρατος, ἠέλιος ὦς,  
Στέμμα φέρων δόξης χερσὶν ὑπ' Ἀθανάτου.
- „ Νῦν δὲ ψυχὴ ἴεσσο τρισόλβιε χῶρον ἐς ἀγνόν,  
Φῶς ἐς Ἀληθείης, ἐς μακάρων θαλάμους.
- „ Καὶ δ' αὐτὴ σε κίχοιμι, Θεῶ ἰότητι μολᾶσα  
Θᾶσσον, νοσφισμοῦ δάκρυ' ὁμορξομένη.
- „ Σῶμ' ἱερὸν δὲ σέθεν ζωὴ ταλάουσα φυλάξω,  
Οὐ μάλα δὴν, οἴμοι, μέσφ' ὑπὸ γαῖαν ἴη·
- „ Τῆ σε, δέμας βασιλείον, ἀκήρατον αὐτι λοχεύσει  
Νῦξ ἱερὴ τύμβου ἐς φάος ἀέναον.
- „ Ἡ μέγα τοῦθ' ὀρώω μυζήριον, οἶον ἐτύχθη!  
Πλάσμα Θεοῦ παλάμης θραύειτ' ἀποφθίμενον!
- „ Νερτέριος δὲ δύνει, τύμβου βορῇ εὐρώεντος,  
Ἄνθρωπος! ζωὸς δ' αὐθι φόωςδ' ἔθορεν!
- „ Ὡ ἅγιος, ἅγιος, ἅγιος Θεέ, δέσποτα τύμβων,  
Ζωῆς τ' ἀθανάτου. ἴλαθι σοῖς λάτρισιν!
- Ἴσκειν· καὶ ῥα κύσσασα φίλον πόσιν, αἰψ' ἀγαναῖσι  
Παμμεδέοντα λιταῖς ἴλατο εὐχομένη.
- Πρὸς δ' Ἐκυρὴν Βασιλείαν ὀδυρομένην φίλον νιὸν  
Τοιάδ' ἔγραψεν ἔπη, δάκρυσι δευομένη·



« И звѣзды смѣсяся съ землей, съ эфиромъ Понць,  
И съ прескомъ послѣ все ужаснѣйшимъ сторипь,  
« И дома Царскіе съ высокими горами,  
Опъ бури, какъ бы прахъ, ужасной возмяпущся,  
« И гробы преснувши изрыгнушь мерпвецовъ,  
И мѣсто съ временемъ, исчезнешъ даже смерпъ;  
« Тогда Безсмерпный Царь, какъ Солнце, засіешиъ,  
Въ рукахъ держа вѣнецъ во славѣ предъ Безсмерпнымъ.  
« Теперь, блаженный духъ, леши въ спрану свяпыхъ,  
Гдѣ испина живешъ въ негибнущихъ домахъ.  
« И я къ тебѣ припши опселъ не умедлю,  
По власпи Божеской, слезу оперши вдовспва.  
« Живяжь, ошанокъ Твой Я буду сохранятьъ,  
Дражайшій сей! доколь не скроюшь въ землю,  
« Гдѣ ночь священная зачнешъ безсмерпно пѣло,  
И наки возродишь изъ гроба на свѣпъ чудный.  
« Какое чудо зрю и что произошло?  
Тварь Божескихъ персповъ разрушилась чрезъ смерпъ!  
« Се человѣкъ идешь подъ землю въ пищу гробу,  
И свѣпъ живой опшоль опяшь произникаешъ!  
« Свяпый, Свяпый, Свяпый Богъ мерпвыхъ и живыхъ!  
Господь безсмерпій! спаси рабовъ швоихъ.»  
Рекла: и Своего обლობызавъ Супруга,  
О милоспи къ Творцу молишвы возсылала.  
Къ Свекрови жъ плачущей и МАТЕРИ Своей  
Словами красными въ слезахъ писала шакъ:

- „*Ἄγγελος ἡμέτερος, ΜΗΤΕΡ φίλη, οὐρανὸν ἔπη·*  
*Σῶμα δ' οἱ ἐρσῆεν, φαιδρὸν ἐς ὧπα ἰδεῖν·*
- „*Φαίης κεν βλεφάροισι χαρᾶς ἵνδαλμα κεχύσθαι*  
*Ψυχῆς, ἀθανάτων κάλλεα δερκομένης.*
- „*Αὐτὰρ ἐγὼ ζῶω, ΜΗΤΕΡ πότνα, ἤντε χόρτος*  
*Αὔος ὑπὲρ γαίης, τυτθὸν ἔχουσα πνοῆς.*
- „*Τίς ποτ' ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΝ, ΜΗΤΕΡ, φθίσεισθαι ἐώλπει,*  
*Τὴν δ' ἀμενῆ ζῶειν, ἢντ' ὄνειρον, ἐμέ;*
- „*Ἔμοι ἐγὼ τλήμων! τί κε ῥέξαιμ'; ἀλλὰ καὶ ἔμπης*  
*Βουλᾶς Θεοῦ, ΜΗΤΕΡ, τλήσομεν ἀχνύμενοι.*
- „*Ἔκα δέ τοι ὕψεσθαι ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΝ θεοειδέα*  
*Ἐλπομ' ἀποφθιμένη· τοῦτ' ἀχέων μοι ἄκος.“*
- Τοῖ' ἄρ' Ἀνασὸς ἔγραφεν, περὶ δὲ δμῶαί γοάσσκον·*  
*Καὶ Τάναϊς ζονάχιζ', ὀλκὸν ἰεῖς δακρῶων·*
- Ἄν δ' ἀκταὶ διδύμης ἀλὸς ἔβραχον· ἐκ δ' ἐτίναξε*  
*Πέτρως Κυανέας Βόσπορος ἀντιάχων.*

~~~~~

*Λεῖβετε Ῥωσσιάδες τῷ πένθει δάκρυα Μοῦσαι,*  
*Κῆκ λιγυρῶν σομάτων οἰκτρὸν ἀεῖδεν ἔπος.*

*Τίς λαῶν ὄδ' ὄμιλος ἐπέσσντο τόσσοι ἀολλῆς;*  
*Τίς δ' αἴγλη δαΐδων λάμπεται αἰθομένων;*

*Τίς δ' ἄμυδις θυνέων καπνὸς ὄρνυται αἰθέρα διῶν*  
*Λακτιζῶν; ὄδμη δ' ἔκπτατο θεσπεσίη;*

*Ἐς τί δ' ἐπερῶσαντ' ἀνδρῶν εἰχες, ἄνθος ἄρειον;*  
*Σήματα δ' ἄμφ' αὔραις σαυροφόρ' ἐκπέταται;*

« Возлюбленная МАТЬ! уже Нашъ Ангель въ небѣ ;

Но шѣло свѣпшися, росой еще покрышо.

« На вѣдяхъ видѣнь зракъ веселія въ душѣ ,

Кошора зришь уже безмерпныхъ красопы.

« Но Я, почпенна МАТЬ, какъ бы права сухая ,

Еще живу , едва дыханіе имѣя.

« Кто думашь могъ , о МАТЬ, чпобъ умеръ АЛЕКСАНДРЪ ,

А я споль слабая, какъ сонъ, еще жива ?

« О горе Мнѣ! — И чпожъ, о МАТЬ, МЫ будемъ дѣлать ?

Божеспвеннымъ судьбамъ НАМЪ должно покоряпсья !

« Окончипь скоро жизнь , и АЛЕКСАНДРА зрѣшь ,

Надеждой льщуся Я, и пѣмъ врачую боль.»

Писала шакъ: а вокругъ ЕЯ рыдали жены ,

И Танаисъ спеналь, влача пошоки слезъ ,

Союзныя моря ревѣли въ берегахъ ,

Воспоръ шумѣль, дая скаламъ Кинейскимъ гласъ.



Пролейте шоки слезъ , пролейте Росски Музы ,

И гореспваю пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ.

Почшо во множеспвѣ народъ спѣшишь полпами

И блещешъ яркій свѣпъ свѣпильниковъ возженныхъ ?

Почшо дымъ жерпвенный несется сквозъ эфиръ ,

И чудный еиміамъ, какъ облако, лепишь ?

Къ чему опборна рапъ въ сихъ полчищахъ подвиглась ,

И развѣваюпся знамена креспносны ?

Τίς δ' ὀχέων δοῦπος ῥήσσει χθόνα; τίς δέ τε Μούσης  
Μολπή ἀμφιδέδῃ' ὄξυ λυγαινομένης;  
Τίς δέ σεμνή βάσις ἀρητήρων ἔσιχ' ἰόντων;  
Κλειτοὶ θ' ἠγεμόνες πάντες ἀγηγέραται;  
Τί σκῆπτρον; τί ζέμμα; τί δέ χλαμὺς αἰγλήεσσα  
Χείρεσιν αἰδομέναις εἶδετ' ἀειρόμενα;  
Ἀμφὶ σοί, Αὐτοκράτωρ, ὄδ' ἐπιρρύτος ἴκται ὄμιλος,  
Τιμᾶς κοιρανέας κηρόθι πορσυνέων.  
Ἔγρεο, καὶ βασιλεῖον, Ἄναξ, τεὸν ἔνδυσο φᾶρος,  
Στέμμα τ' ἔχων, σκῆπτρον τ', ἐμβυσίλευε λεῶ.  
Ἔγρεο, καὶ χρυσεοῖσιν ὀχήμενος ἄρμασι, κυδρὸς  
Διὰ πολλῶν πτολίων πρὸς βασιλεῖον ἔλα.  
Βάσῃ ἴθι κηρύττεσθ', Ἥχοϊ, μετὰ πάντεσι λαοῖς,  
Σφῶ πατρὶ ἀντιάαν Κοιράνω ἐρχομένῳ.  
Ἔξετε τοι δήμοι, δέχνησθ' ἐπιόντες Ἄνακτα,  
Ξανθὸν ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΝ, εὐκλέα νισσόμενον.  
Εἶποτέ μιν πτολίεσσιν ἐποπτεύοντα θέμιστας  
Ξεινίσσατε, τροφέα ξυνὸν ἐπερχόμενον.  
Εἶποτε νοσήσαντα τροπαιοφόρον πολέμοιο  
Ἠγάσσασθ', ἀβραῖς τερόμενοι θαλίαις.  
Εἶποτε οἱ ρ' εἰκοῖς τε, τρόπαιά τε, τόξα τε μακρὰ  
Στήσασθ', ὧν ἀρετῶν μνήματ' ἐπεσομένοις.  
Καὶ νῦν μιν τιμᾶτε· Πετρούπολις, ἦνιδε νίκης  
Σεῖο πύλας περὶ κύνδιμος Αὐτοκράτωρ.  
Ἦψεσθ' ὄμμα Ἄνακτος ἐϋφρονος. — Ἀλλὰ τοι, αἰ αἰ,  
Οὐκέτι φαῖδρ' ὄροον· νῦξ γὰρ ἔχει θανάτου!

Почто бьешъ землю спукъ быспрѣйшихъ колесницъ?

И мусикійскій звукъ пронзаетъ съ болью слухъ?

Почто такъ шеспвуютъ служители священны,

И вмѣстѣ собраны Начальства знаменипы?

Хламида свѣшлая, и Скипетръ и Вѣнецъ,

Куда съ почченіемъ несущся на рукахъ?

Монархъ! Къ Тебѣ народъ спекается толпами,

Царю чшобы воздашь Его доспойну почестъ.

Воспанъ, и въ Царскую Порфиру облекись,

И съ Скипетромъ въ вѣнцѣ владѣй народомъ симъ.

Воспанъ, и шеспвуя на колесницахъ славно,

Гряди чрезъ множесшво градовъ Твоихъ на Царсшво.

О Вѣсть! безчисленнымъ народамъ возвѣсти,

На вспрѣчу чшобы шли Владыкѣ и Ошцу.

Придите, и Царя грядущаго примите,

Золошовласаго во славѣ АЛЕКСАНДРА.

Не рады ль были вы пишапелю людей,

Какъ Онъ обозрѣвашъ суды градовъ ходиль?

Не выль оливными цвѣшвами украшенны,

Побѣдоноснаго, чудясь, съ войны вспрѣчали?

Не выль ваянія, профей, столько аркъ

Ему воздвигли въ честъ и памяшь дѣль Его?

И нынѣ чшипте всѣ; о шы Пешрополь славный!

Се шеспвуетъ Монархъ въ швои враша побѣдны.

Возрише на лице божесшвенно Царя, —

Но ахъ! гдѣжъ свѣшъ Его? закрыла смерши ночь;

Καὶ κεφαλὴ ζαθέη, τῇ ᾗ εἶκαθε μυρία φωτῶν  
Κράατα καὶ βουλαί, κεῖται ἀποφθιμένη!  
Οἴσετε δ' οἱ καὶ δῶρα· τὰ δ' ἔχ' ἄλλας, ἐδέ μεν ἄρτον, (α)  
Οὐδ' ὄσα κοιρανίης τέθμια πεφρόδαται·  
Ἄνθεα δ' ἐκ χαρίτων κήπου φέρετ'· οἴσετε πάντες  
Εὐθαλέας γλυκερῆς μνημοσύνης σεφάνους.  
Ῥαίνετέ μιν πόθῃ ἀμφὶ μύροισιν· φαίνεται ἑέρσαις  
Ὀφθαλμῶν, ψυχῆς ἄνθεσιν ἀχνυμένης·  
Καὶ δ' εὐχῶν θυέεσσι μυρίζετε· χεῦετ' Ἄνακτι  
Μολπὰς εὐλογίης ἐκ σομάτων καθαρῶν.  
Τὴν δ' ἀρ' ὁδὸν χρυσέοις μὴ οἱ σρώννυσθε τάπησι,  
Μὴ πτόρθοις συγανοῖς ἐκ ταναῆς ἐλάτης, (β)  
Γλαυκῆς δ' ἐξ ἐλαίης ἐλεήμονος ὕσατον οἶμον  
Πάσσειτ' ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ ἔργεσιν εὐθαλέσιν.  
Εἴκατε καὶ ξείνοις Εὐεργέτου ἄσσον ἰκέσθαι,  
Τοῦδ' ἀγανοφροσύνης πολλὸν ἐπαυρομένοις·  
Δάκρυ τέρεν σπείδουσιν ἀποιχομένα Βασιλῆϊ,  
Ἦς εὐγνωμοσύνης πευκαλέην χάριτα!  
Τοῖος ἐγὼν ἱερὰν πρὸς λάρνακα σεῖο πελάζω,  
Εἰς ἀπὸ τῶν πολλῶν, οὐς ἐσάωσας Ἄναξ.  
Γνωτὴ σοι, Βασιλεῦ, γῆρυς πέλεθ', ἢ τὰδ' αἶισε,  
Πικρὸν ἰεῖσα μέλος, μήποτ' ὀφειλόμενον·  
Πολλοὶ δ' ἄρ' πολέων ἀρετῶν σοι ἔσονται ἀοιδοί,  
Διήτης ἐν νεφέεσσ' οὐποτε δυσσομένων·  
Καὶ κλέος ἢ ἄλθει εὐρὸν θρέψει σοι ἐπ' αἶαν,  
Ἕμνων τ' εὐαγέων δεσπότης Εὐσεβίη·

(α) Ἔθος· τίτο παρὰ τοῖς Ῥώσσοις, ἄρτον καὶ ἄλλας ἐπὶ πίνακος χρυσῆ δωροφορεῖν τῷ Αὐτοκράτορι κατὰ πόλεις, ἢ μόνον ὅτε τὸ πρῶτον εἰς τὴν ἀρχὴν καθίσταται, ἀλλὰ καὶ νικηφίρῳ ἀπὸ στρατείας ἐπανόντι.

(β) Καὶ τίτο εἴθισται τοῖς Ῥώσσοις, ἐλάτης κλάδοις σρώννυεν τὴν ὁδὸν, καθ' ἣν ἐκφέρεται ὁ νεκρὸς.

И славная глава покоишься сномъ крѣпкимъ ,  
Которой цѣлые народы покарались !  
Несите въ даръ Ему не хлѣбы и не соль ,  
Ни шо, что по правамъ надлежишь до Царей .  
Изъ сада добрыхъ дѣлъ цвѣты Ему сберите ,  
И славной памяти вѣнокъ изъ нихъ сплешите .  
Опрыскайте Его росой душистой глазь ,  
Которая есть цвѣтъ скорбящія души .  
И жертвами моливъ предъ Нимъ благоухайте ,  
Въ благословеніяхъ и пѣсняхъ изъ устъ чистыхъ .  
Парчой златой Ему не устилайте путь ,  
Ни вѣпьями съ елей печальныхъ и большихъ ,  
Но пѣжной маслины зелеными листьями  
Путь Милоспивому усыпьте АЛЕКСАНДРУ .  
Теперь предстань и ты, о чуждый ! предъ Царя ,  
Добропою Его который уязвленъ .  
И ты оплачь Отца горячими слезами ,  
И даръ Ему воздай опъ сердца сокрушенна .  
Единъ изъ шаковыхъ предъ гробомъ предстою ,  
Которыхъ въ множествѣ опъ тибели спасъ Царь .  
Тебѣ знакомъ сей гласъ, дѣла Твои воспѣвшій ,  
Печальной пѣсню, которой не желалъ бы .  
И многи спанушъ пѣшь великія дѣла ,  
Которы не задушъ забвенья въ облака .  
И истина Твою пишашъ здѣсь славу будешь  
И Вѣра сохранишь въ своихъ священныхъ гимнахъ .

Νῦν δ' ἄρ' ὑπ' εὐλογίαις ἀμψυχούσησι καθεύδων  
Κοιμῶ, Ἄναξ, ὕπνον ἱερὸν, ἀμβρόσιον·  
Πάρ δέ τε συννάοις Βασιλήεσσιν ἔνδοθι νηοῦ  
Λέξαι συγγενέσιν μέχρις ἀνασάσιος·  
Καὶ κραδίαις βασιλευε, καὶ ἐν φρεσὶ, σοῖς μετὰ λαοῖς,  
Κἄν πόλῳ, ἀθανάτῃ ψυχῇ ἀγαλλόμενος.



Λήγετε Ῥωσιάδες τῆ πένθεος, λήγετε Μοῦσαι,  
Κἄκ λιγυρῶν σομάτων ἐσθλὸν ἀείσατ' ἔπος.  
Λήγε γόων Βασιλεία, κεδνὴ ΜΗΤΕΡ, Σὺ τ' ἄκοιτις  
Δίου ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΥ, δῶμα τ' Ἀνακτόρεον·  
Πᾶσι φθειῖσθ' ἐπέοικεν, ὅσοι θνητοὶ γεγάασιν,  
Οὐδένα δ' ἀθάνατον ἠέλιος καθορᾷ·  
Ἔως ἄμ' ἀΐξασα μέτρον βιότοιο χαλέπτει·  
Ἔσβεσε δ' ἄμμι δύων ἡμαρ ἐν ἠέλιος.  
Γεινόμενοι φθίνομεν· φθίντες γέ μεν, αὐτίς ὀπίσσω  
Γεινόμεθ' ἐκ τύμβων ἄφθιτοι, ἀθάνατοι·  
Ὡς ἀεθλος πέλεται πᾶσιν βίος εὐσεβέεσσι,  
Χ' ὦ θάνατος, νίκη· κ' ἀμβροσίη, σέφανος·  
Τῷ τοι, Εὐρυνάσσ', ἐσθλὰ φρεσὶ μητιόωσαι,  
Τλήτ' ἐπ' ἈΛΕΞΑΝΔΡῶ πείσμασιν εὐσεβίης·  
Νικήσας γὰρ ἄεργο Θεὸν μέγαν, ὅς μιν ἔηκεν  
Ἐν κόσμῳ βελέων θέσπιν ἑοῖο λάτριν.  
Νεύει δ' ὕμμιν ἄνωθεν ὑπ' ὄμμασι μελιχίοισι,  
Θυμὸν ἔχειν ἀγαθόν, μηδ' ἐπὶ οἱ σενάχειν.



Теперь покойся, Царь, Твоимъ священнымъ сномъ  
Подъ звукомъ сладостныхъ благословеній всѣхъ,  
И сродниковъ Царей среди почій во Храмѣ,  
Доколѣ новый день для всѣхъ не возсіяетъ.  
Народовъ же Твоихъ и сердцемъ и умомъ  
И на небѣ владѣй безсмертною душой.



Скончайте общій плачь, скончайте Росски Музы,  
Упѣшипельну пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ.  
Преспаньше сѣшовашь, о Мать и Ты Супруга!  
И царственнй весь домъ благаго АЛЕКСАНДРА.  
Рожденнымъ смертными всѣмъ должно умереть,  
Безсмертнаго не зришь и Солнце на земли.  
Восходишь ли заря, жизнь нашу сокращаешь,  
И Солнце заходя, у насъ день погашаешь.  
Раждаешь, плѣбемъ мы, исплѣбемъ же когда,  
Неплѣбными во вѣкъ родимся изъ гробовъ.  
Жизнь наша поприще для всѣхъ бываетъ вѣрныхъ,  
Побѣда же естъ смерть, безсмертіе награда.  
И такъ, Державныя! мысль здравую имѣя,  
Крѣпнись въ рою во скорби о Царѣ.  
Свершивъ побѣду Онъ, вознесся въ небо къ Богу,  
Какъ надлежишь судьбъ свершишело верховныхъ.  
Се кропкими даешь очами съ неба знакъ,  
Бышь бодрымъ въ духѣ намъ, о Немъ не сожалѣшь.

Ρεῖά τε γὰρ ζῶει, καὶ ἤδεται ἤματα πάντα  
Ἐν πόλει ἡγαθήη, λῆξιν ἔχων μακάρων·  
Ἐνθα Θεὸς πέλεται φάος, ἦδος, κῦδος ἐκάσῳ·  
Ἐνθ' οὐ νύξ πελάα, ἔ μῶρος, ἔ δάκρυον.



Λήγετε Ῥωσσιάδες τῆ πένθειος, λήγετε Μοῦσαι,  
Κῆκ λιγυρῶν σομάτων ἐσθλὸν ἀείσατ' ἔπος.  
Λίγη γόων σερνοῦχε, πολύρῳυτε Ῥωσσιᾶς αἶα,  
Ῥώσσων τ' εὐσεβέων ἔθνος ἀγαυότατον.  
Ἦ μὴν καὶ πόνος ἐστὶ πατρὸς τητᾶσθαι ἀνακτος,  
Οἷος ἈΛΕΞΑΝΔΡΟΣ, πᾶσιν ἀειδόμενος·  
Ἄλλ' ὁ μὲν οὐρανόθεν πάτραν ἵλαος ὄραται,  
Κάλλιπε δ' ὑμῖν Ἄνακτ' οὔτι χειριότερον·  
Ζήτω ἡμέτερος Βασιλεὺς, ΣΩΤΗΡ τε, πατήρ τε,  
Δίου ΑΛΕΞΑΝΔΡΟΥ δῖος ἀμοιβὸς Ἄναξ,  
ΝΙΚΟΛΕΩΣ πρῶτος, μεγαλώνυμος, οἷς μετὰ λαοῖς  
Νίκη εὐσεβέεσσ', Εὐσεβίης πρόμαχος·  
Ἴσος ἈΛΕΞΑΝΔΡΩ ψυχὴν τε, φρένας τε, μένος τε,  
Ἐργ' ἀγαθὰ ῥέξων, εὐκλέα, θεσπέσια·  
Εὐρεῖη Σοι, Ἄναξ, χαρίτων τετάνυσαι ἄρουρα,  
Πάρ δε τέθηλε κλέες λήϊον ὑψίκομον!  
Οἶ, Ἑλλάς γοάα, Πίσις ζένει, αὐτὰρ Ἀλάσῳ  
Μαίνεται ὄρσο Μέδων, κλυθι, Θεὸς καλέει!  
Ἄλλ' Ἄνα παμμεδέων, χριστὸν σέθεν Ἀυτοκράτωρα  
Σώζοις! Ῥωσσίης χειρας ὑπερθεὺν ἔχων.



Блаженство жизнь Его и радость безпреспанна,  
Во градѣ Божіемъ среди мужей блаженныхъ,  
Для каждаго гдѣ Богъ ушѣха, радость, свѣтъ,  
Куда не смѣешь ношь, ни смерть вспуишь, ни плачь.



Скончайте общій плачь, скончайте Росски Музы,  
Упѣшипельну пѣснь воспойте гласомъ сладкимъ.  
Преспань рыдашь земли обширна грудь Россійской,  
И доблестный народъ Россіянъ благовѣрныхъ.  
Велика скорбь Царя лишиться и Ошца,  
Какимъ и былъ опъ всѣхъ хвалимый АЛЕКСАНДРЪ.  
Но крошко кпо съ небесъ зришь на опчизну Россовъ,  
Коль добляго Царя намъ по себѣ оспавиль!  
Да здравствуешь нашъ Царь, Снасипель и Опець,  
Божеспвенный оняшь, какъ былъ и АЛЕКСАНДРЪ.  
Се Первый НИКОЛАЙ, Великоименимый,  
Поборникъ вѣрнымъ всѣмъ и Вѣры Защишипель.  
И силой АЛЕКСАНДРЪ, и сердцемъ и душой,  
Рожденный на дѣла Божеспвенны, благи.  
Обширно предъ ТОБОЙ благодарній поле,  
О! Царь, и славы ужъ высоки класы зрѣюшь.  
Бѣснуешся злодѣй, Элада, Вѣра спонуть;  
Внемли имъ, Царь, воспань, Богъ призываетъ.  
Всевышній! Твоего Хриспа намъ сохрани,  
И надъ Россією Державну длань проспри.



Λήγετε Ῥωσσιάδες, μερόπων ἴσχεσθε αἰοδαί·  
Σιγαῖτε θνητῶν χεῖλε' ἐπιχθονίων·  
Ἐψόθεν ἐκ νεφέων θέσπις βρόντησεν αὐτή·  
Κέκλυτε γηγενέες, ζύνετε δ' εὐσεβέες.  
,, Δόξα ἐν ὑψίσοισι μόνῳ Θεῷ παμβασιλῆϊ,  
Δόξα τρισσαγίῃ, καὶ κράτος ἀέναον·  
,, Αὐτὸς ἔην, καὶ ἔσι, καὶ ἔσσειται, οἷά τε πάντων  
Ἄρχῃ, καὶ μέσσον, καὶ τέλος αἰδίων.  
,, Ὅντα δ' ἀπ' οὐκ ὄντων, καὶ ἐκ κακῆ ἤγαγεν ἑσθλά,  
Ζωὴν τ' ἐκ θανάτου, καὶ φάος ἐκ χάεος·  
,, Ἀσέρας αὐτὸς ἴησιν ἐπ' ἀντολίην τε, δύσιν τε,  
Ἐθνεα τ' ἀνθρώπων, καὶ Βασιλεῖς μεγάλους.  
,, Πάντα δ' ἔῃ σοφίῃ μητίσασατο· πᾶσι δ' ἀνάσσει,  
Αἰθέρι, καὶ πόντῳ, καὶ χθονὶ, καὶ αἰθήρῃ.  
,, Ὡ ἵτε πᾶσα φύσις Θεὸν ἄφθιτον ὑμνέει αἰὲν,  
Καὶ νόες, καὶ ψυχαὶ, καὶ κτίσις ὑλοτέρῃ.  
,, Ὑμνέει' εὐσεβέες τε καὶ Ἄγγελοι οὐρανίωνες,  
Δόξα ἐν ὑψίσοις, καὶ κράτος ἀέναον.

Τέλος.

Скончайте Музы пѣснь, престаньте смертныхъ гласы,

Умолкните уста безсильныхъ земнородныхъ.

Съ небесъ гласъ Ангельскій изъ облакъ возгремѣль,

Услышите смертные и вѣрныхъ сонмъ внимли:

« Владыкѣ пварей всѣхъ, во вышнихъ слава Богу,

Держава вѣчная и слава присвятая.

« Который былъ, есть, будетъ всѣхъ вещей

Началомъ и средой и безъ конца концемъ,

« Который суще извелъ все изъ несущихъ,

Добро изъ зла, живопъ изъ смерпи, свѣтъ изъ мрака,

« Народы цѣлы кпо, великихъ кпо Царей,

На западъ, будто бы съ воспока звѣзды, шлепъ.

« Премудроспью своей Кпо всемъ распоряжаетъ,

И адомъ, и землей, и понпомъ и ээиромъ.

« Гряди, хвали вся пварь, хвалише Господа во вѣкъ

И духи, души всѣ и брэнна всяка пварь.

« Воспойте вѣрные и Ангели съ небесъ:

Верховному Царю Держава, слава въ вѣкъ.

К О Н Е Ц Ъ .



Служба



Слбгу

3  
[ p . )

СІБІРЬ



Слбгу

1010